Chap-2

: अध्याय -- दो :

: वेश्या-जीवन के विभिन्न आयाम :

: अध्याय- दो :

: वेश्या-जीवन के विभिन्न आयाम :

प्रास्ताविक :

हमारा शोध-कार्य हिन्दी उपन्यासों में चित्रित वेश्या-जीवन से सम्बद्ध है, अतः प्रस्तुत अध्याय में वेश्या-जीवन के विभिन्न आयामों, विभिन्न पक्षों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार करने का उपक्रम है। यह व्यवसाय इतना ही पुराना है जितना कि हमारा समाज। समाज ने जब स्त्री-पुरुष के यौन-जीवन को लेकर कुछ मान-दण्ड कायम किये, कुछ नैतिक मूल्यों की अवधारणा को रखा और उसे मर्यादित, नियमित व अनुशासित करने के हेतु विवाह-संस्था को कायम किया; शायद तभी से हमारे समाज में वेश्याओं का अस्तित्व भी है। पूर्ववर्ती अध्याय में हम निर्दिष्ट कर चुके हैं कि हमारे प्राचीन संस्कृत

-प्राकृत-पाली-अपभ्रंश साहित्य ; पुराणों , रामायण , महाभारत आदि ग्रन्थों में वेश्याओं का उल्लेख ही नहीं मिलता ; बल्कि उनके जीवन के विस्तृत ब्यौरे , उनकी जीवन-शैली , समाज में उनका स्थान जैसे अनेक मुद्दों की विस्तृत चर्चा भी उपलब्ध होती है । जिस प्रकार कोई व्यक्ति जन्म से आतंकवादी होकर नहीं जन्मता है , ठीक उसी प्रकार कोई लड़की जन्म से वेश्या होकर पैदा नहीं होती है । हां , प्राचीन समय में जो वेश्याओं के महलों में पैदा होती थीं , या आज के समय में जो वेश्याओं के कोठों में पैदा होती हैं , वे आगे चलकर अधिकांशतः वेश्या-जीवन ही अपनाती हैं । अन्यथा किसी भी लड़की या स्त्री को वेश्या होना या कहलाना अच्छा नहीं लगता । वे अपनी इच्छा से इस व्यवसाय में नहीं आतीं । अनेक प्रकार की मजबूरियां , लाचारियां , असहायताएं , प्रवंचनाएं उन्हें इस व्यवसाय में खींच लाती हैं । इस अध्याय में हम वेश्या-जीवन से सम्बद्ध विविध मुद्दों पर हम अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे ।

वेश्या : परिभाषा और व्याख्या :

सामान्य तौर पर जो लड़की या महिला आर्थिक लाभ से प्रेरित होकर किसी अन्य पुरुष से यौन-संबंध स्थापित करती है तो उसे "वेश्या" संज्ञा से अभिहित किया जाता है । दूसरे शब्दों में जो अपने देह का व्यापार करती है , अपने शरीर का सौदा करती है , उसे "वेश्या" कहा जाता है । हमारे यहां कहा गया है — "बुभुक्षितो किं न करोति पापम् " — अर्थात् भूखा व्यक्ति कौन-सा पाप नहीं करता ? गरीबी और दरिद्रता के कारण अपना तथा अपने पर आश्रित लोगों का पेट पालने के लिए बहुत-सी औरतों को यह जिस्मफरोशी का धंधा अपनाना पड़ता है । यहां इस शब्द के अर्थ और परिभाषा पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे ।

§1§ नालंदा विशाल शब्द-सागर में "वेश्या" का अर्थ दिया गया है — वह स्त्री जो गाने बजाने तथा धन लेकर संभोग कराने का काम करती है ।[1] यहीं पर उसका एक अर्थ "रंडी" भी दिया गया है । नालंदा कोश में इसके लिए वेशयुवती , वेशवधू , वेशवनिता , वेशस्त्री , वेश्यांगना आदि शब्द भी दिएगए हैं ।[2] वेश्या के घर के लिए वेश्यालय और वेशवास शब्दों का प्रयोग मिलता है । उसके लिए वेश्य शब्द भी मिलता है । वेश्या के दलाल या भड़ुए के लिए "वेश्याचार्य" शब्द प्रयुक्त हुआ है ।[3] इसी कोश में अन्यत्र वेश्या के लिए "वारांगना" शब्द भी प्रयुक्त हुआ है ।[4] यहां उसके लिए वारवधू , वारमुखी , वारयुवती तथा वारसुंदरी आदि शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं । "वारसेवा" का अर्थ वेश्यापन या छिनाल दिया गया है ।[5] इसी कोश में वेश्या के लिए "गणिका" शब्द भी दिया है और उसका अर्थ "वेश्या" या "रंडी" बताया गया है ।[6]

§2§बृहद् गुजराती कोश में "वेश्या" शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है — " व्यभिचार अने गावा-बजाववा-नाचवानो धंधो करनारी स्त्री , गणिका , वारांगना , रामजनी , कसबण । "[7] उसका एक अर्थ यहां यह भी दिया गया है वह वस्तु जो ज्यादा टिकती नहीं है । वेश्या के साथ का व्यापार भी टिकाऊ नहीं होता । धन देकर संभोग किया कि सम्बन्ध समाप्त । वेश्या के साथ का संबंध तब तक का होता है , जब तक के लिए उसे खरीदा जाता है । वेश्या के साथ के संभोग को वेश्यागमन कहा जाता है और ऐसे पुरुष को वेश्यागामी कहते हैं । वेश्या के व्यवसाय के लिए "वेश्यावृत्ति" और वेश्यालय के लिए xx " वेश्यावाडो" शब्द यहां दिया गया है ।[8] अन्यत्र इसी कोश में उसे वार-कन्या , वारस्त्री ,वारांगना , वारवनिता प्रभृति शब्द भी दिए गए हैं ।[9]

§3§ वेश्या को अंग्रेजी में Prostitute कहते हैं और "the Concise oxford Dictionary" xx में उसका अर्थ दिया गया है — "A woman who offer her body to indis- criminate sexual intercourse for hire" [10]

और उसके व्यवसाय को " Prostitution " कहा है । यहां " Indiscrimination" से तात्पर्य यह है कि वेश्या अपने ग्राहकों में चुनाव नहीं कर सकती । जो भी व्यक्ति पैसा लेकर आता है , जो उसका रेट है उसके हिसाब से , उसके साथ वह संभोग करती है । उसमें जाति , धर्म , रंग आदि को लेकर वह भेदभाव नहीं रखती है । हां , व्यक्ति गुप्तरोगी या कोढ़ी हो तो वह मना कर सकती है । आजकल "एड्स" आदि से बचने के लिए वे "निरोध" ⟮ Condom ⟯ का आग्रह रखती हैं ।

⟮4⟯ "Compact Oxford Reference Dictionary" में " Prostitute " शब्द के संदर्भ में बताया गया है कि उसका मूल लेटिन रूप " Prostituere " है जिसकी अर्थ है — " offer for Sale ". इस शब्द के अर्थ की व्याख्या यहां इस प्रकार की गई है — " A person who has sexual intercourse for Payment". यहां पर गौरतलब बात यह है कि " Woman " शब्द के स्थान पर " Person " शब्द दिया गया है । उसका तात्पर्य यह है कि जो भी व्यक्ति पैसा लेकर यह काम करता है वह " Prostitute " है , फिर चाहे वह पुरूष ही क्यों न हो । इस प्रकार इस व्याख्या में " Male Prostitute " की बात अपने आप आ जाती है । 11

⟮5⟯ "Chambers English Hindi Dictionary " में " Prostitute " शब्द के संदर्भ में बताया है — वेश्यावृत्ति करना , बुरे काम में लगाना आदि । उसके अन्य पर्याय दिये गये हैं — "गणिका" , "वेश्या" , "छिनाल" , "रंडी" । उस कर्म के लिए "वेश्यावृत्ति" , "वेश्याकर्म" , "रंडीबाजी" आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं । " Prostitution " करानेवाले के लिए " Prostitutor " शब्द प्रयुक्त हुआ है । उसके हिन्दी पर्याय दिए गए हैं — "गणिका व्यापारी , वेश्यावृत्ति कराने वाला , रंडीबाज , दलाल आदि-आदि । 12

§6§ डा. हरदेव बाहरी के बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश में "Prostitute" के गणिका, वेश्या, वारांगना, वारवनिता, वारनारी, छिनाल, पतुरिया, रण्डी आदि अर्थ दिए हैं। उसके दो अर्थ और भी दिए हैं — भ्रष्ट व्यक्ति, भाड़े का टट्टू। अंग्रेजी में क्रिया के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग होता है और तब उसके अर्थ होते हैं — §स्वयं को§ वेश्या बनाना, रति व्यापार करना, सतीत्व बेचना आदि-आदि। इसके दूसरे अर्थ हैं — सम्मान बेचना, योग्यता का व्यापार करना, खराब करना, बिगाड़ना इत्यादि। "Prostitute" से "Prostitution" शब्द बना है, जो भाववाचक संज्ञा है। उसके अर्थ हैं — गणिकावृत्ति, वेश्यावृत्ति, वेश्याकर्म, वारसेवा, रण्डी का पेशा, छिनालपना, दुष्प्रयोजन, लैंगिक व्यभिचार, बदकारी आदि-आदि। वेश्याकर्म करानेवाले व्यक्ति को "Prostitutor" कहते हैं, जिसके अर्थ हैं — वेश्यापणिक, गणिका व्यापारी, वारांगना व्यापारी, वार-वनिता-विलासी, वेश्या बनाने वाला, दलाल, पतुरियाबाज, रण्डीबाज आदि-आदि। ध्यान रहे बारंबार वेश्याओं के पास जो जाता है और वेश्याओं की जिसे आदत पड़ गई है ऐसे व्यक्ति को भी रण्डीबाज कहा जाता है। [13]

§7§ वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिन्दी कोश में "वेश्या" शब्द के संदर्भ में कहा गया है — "वेशेन पण्ययोगेन जीवति इति वेश्या"। उसके अर्थ हैं — बाजारू स्त्री, रण्डी, गणिका, रखैल। भोग के लिए रंडी को जो मजदूरी दी जाती है उसे "पणः" कहते हैं। वेश्याओं के स्वामी या मालिक के लिए "वेश्याचार्य" शब्द दिया गया है। वेश्याचार्य के अर्थ दिए हैं — भड़ुआ, लौंडा, गांडू। वेश्याओं के स्थान के लिए दो शब्द दिए हैं — वेश्याश्रय और वेश्या-गृह। उसका एक अर्थ "चकला" भी यहाँ दिया गया है। वेश्या के साथ किए गए संभोग के लिए "वेश्यागमन" शब्द दिया है। उसके दूसरे अर्थों में व्यभिचार, रण्डीबाजी आदि का उल्लेख मिलता है। [14]

§8§ मुहम्मद मुस्तफा खाँ "मद्दाह" के उर्दू हिन्दी शब्द-कोश में "वेश्या" का जिक्र "तवाइफ़" शब्द के अन्तर्गत हुआ है । हिन्दी-उर्दू में कहीं-कहीं उसके लिए "तवायफ़" शब्द भी प्रचलित है । इसके अर्थ दिए गए हैं — रंडी, गणिका, वारमुखी, क्रीडानारी, चर्चटी, विभावरी, नगरनायिका, वेश्या और मंगलामुखी । उसके पुत्र के लिए शब्द है — तवाइफ़ज़ाद । शुभ कार्यों में वेश्यादर्शन को शकुन माना गया है, शायद इसीलिए उसे "मंगलामुखी" कहा गया होगा ।[15] अन्यत्र इसी कोश में "रक़्क़ास" शब्द भी मिलता है जिसका अर्थ दिया गया है — नर्तकी, नाचनेवाली, लासिका । इस शब्द के पुल्लिंग के अर्थ हैं — नर्तक, नाचनेवाला और तांडवी ।[16]

उपर्युक्त कोशों के अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रन्थों में हमें वेश्या-जीवन की व्याख्या या परिभाषा प्राप्त होती है । वेश्यावृत्ति एक सामाजिक बुराई है और प्राचीन काल से प्रचलित रही है । इस संदर्भ में जियाफ्रे लिखते हैं —" वेश्यावृत्ति विश्व का सबसे पुराना व्यवसाय है और वह तभी से चला आ रहा है जबसे कि समाज में लोगों की काम-भावनाओं को विवाह और परिवार में सीमित किया गया है ।"[17] भारत में ही नहीं वरन् यूनान एवं जापान जैसे देशों में भी वह "हीटरी" और "गीशा" के रूप में प्रचलित रहा है । यौन-इच्छा मनुष्य की प्राकृतिक इच्छाओं में से एक है । उसकी उचित संतुष्टि आवश्यक है । पर विवाह-संस्था के कारण कुछ लोग यौन-असंतुष्टि का अनुभव करते हैं । सामाजिक नीति-नियम, रिवाजों और रूढ़ियों के रहते कई पुरुषों का समय रहते विवाह नहीं होता है । कुछ लोग तो आजीवन अविवाहित रह जाते हैं । ऐसे लोग प्रायः यौन-तुष्टि के लिए वेश्याओं के पास जाते हैं । वैवाहिक जीवन में भी कई बार ऐसी स्थितियां आती हैं जब व्यक्ति यौन-तुष्टि के अभाव से पीड़ित रहता है । ऐसी स्थितियों में वह वेश्याओं द्वारा ही अपनी यौनेच्छा की तृप्ति करता है । यद्यपि सामाजिक-नैतिक दृष्टि से उसे एक बुराई माना जाता है । वेश्या-व्यवसाय को सामाजिक स्वीकृति कभी नहीं मिली है । यहाँ वेश्या-जीवन व वेश्यावृत्ति से

सम्बद्ध कतिपय परिभाषाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है —

/1/ एनसायक्लोपीडिया आफ सोशियल साइन्सिस में वोल्यूम 11 तथा 12 में "Prostitution" पर विचार किया गया है। इस क्षेत्र के अधिकारी विद्वान मे ज्योफ्रे ने इस संदर्भ में लिखा है —"Prostitution is a practice of habitual intermittent sexual union, more or less promiscuous for mercenary inducement" 18

अर्थात् वेश्यावृत्ति आदतन या कभी-कभी बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति के साथ धन के लिए किया गया लैंगिक सहवास है। यहां एक बात पर तवज्जो देनी चाहिए कि ज्योफ्रे ने इसे "habitual" कहा है। इसे प्रायः हमें ग्राहक के संदर्भ में लेनी चाहिए, क्योंकि वेश्या "यौन-तुष्टि" के लिए नहीं, बल्कि "धन-तुष्टि" के लिए इस काम में प्रवृत्त होती है। दूसरी बात यह है कि वेश्या सचमुच में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं बरतती। हां, यदि कोई ग्राहक उसे ज्यादा धन देता है तो वह उसका ज्यादा ध्यान रखेगी। पर यहां "विचार-रेखा" धन है। जो भी ज्यादा धन देगा वह उसे ज्यादा प्यार करेगी फिर उसका पात्र कोई भी हो।

/2/ "वेश्यावृत्ति" के संदर्भ में इलियट व मैरिल ने अपने ग्रन्थ "Social Disorganization" में लिखा है — "Prostitution is an illicit sex unions on a promiscuous and mercenary basis with accompanying emotional indifference" 19

अर्थात् वेश्यावृत्ति एक भेद-रहित और धन के लिए स्थापित किया गया अवैध यौन-संबंध है जिसमें भावात्मक उदासीनता होती है। इस परिभाषा में मुख्यतया चार बातें हैं — 1. यह एक भेद-रहित संबंध है। अर्थात् वेश्या जाति, धर्म, रंग, रूप, शिक्षा आदि की दृष्टि से अपने ग्राहकों में कोई भेदभाव बरतती नहीं है। उसके लिए तो उसके सभी ग्राहक बराबर है। 2. यह धन के लिए किया गया यौन-संबंध है। उसमें पैसा ही मुख्य है। जिसके पास भी पैसा है वह वेश्या के पास जा सकता है। 3. यह अवैध यौन-संबंध है। उसे समाज या विधि के द्वारा कोई मान्यता प्राप्त नहीं

है । अतः इस संबंध से वेश्या को यदि गर्भ ठहरता है तो उसका बच्चा नाजायज माना जायेगा । 4. यह संबंध भावात्मक दृष्टि से शून्य है । उसमें वेश्या निर्लेप और तटस्थ रहती है । यौन-संबंध के दौरान पति-पत्नी में या प्रेमी-प्रेमिका में जो एक रागात्मकता पाई जाती है, उसका यहां नितान्त अभाव होता है । उस समय वेश्या यदि कुछ कहती भी है तो वह निहायत बाजारू, फूहड़, अश्लील और भोंडा होता है । यह बात और है कि अपने ग्राहक से ज्यादा पैसा ऐंठने के लिए कुछ वेश्याएं भाव-प्रदर्शन का नाटक कर लेती हैं ।

/3/ क्लीनार्ड का मत भी एलियट और मैरिल जैसा ही है -- " prostitution is a sex union on a promiscuous and mercenary basis in which no one can find any kind of emotional attachment"[20] अर्थात् वेश्यावृत्ति एक भेद-रहित तथा धन के लिए किया गया यौन-संबंध है जिसमें भावात्मक उदासीनता पायी जाती है । इस परिभाषा में प्रमुखतया तीन बातें हैं -- 1. वेश्यावृत्ति एक ~~एक~~ भेद-रहित यौन-संबंध है, 2. वह धन के लिए किया गया संबंध है तथा 3. उसमें भावनात्मक दृष्टि से वेश्या~~x का~~ का कोई " " नहीं होता ।

/4/ सुप्रसिद्ध सेक्सिओलोजिस्ट हेवलोक एलिस इस संदर्भ में लिखते हैं -- " prostitute is one who openly abandones her body to a number of man without choice for money"[21] अर्थात् वेश्या वह है जो अपने शरीर को बिना किसी विकल्प (choice) के पैसों के लिए कई लोगों को मुक्त रूप से उपलब्ध कराती है । हैवलोक एलिस की इस परिभाषा में प्रमुखतः तीन मुद्दे हैं -- 1. वेश्या के सामने कोई विकल्प (choice) नहीं है । कोई भी व्यक्ति जिसके पास पर्याप्त पैसा है उसके पास जा सकता है । 2. यह पैसों के लिए किया गया यौन-व्यापार है । 3. वेश्या किसी एक की नहीं होती । वह कइयों की है । शायद इसीलिए उसे नगरवधू, नगरनायिका या वारवधू कहा गया था ।

/5/ सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री बोंगर इस संदर्भ में अपनी टिप्पणी इस प्रकार देते हैं — "Those women are prostitutes who sell their bodies for the exercise of sexual acts and make of this a profession . 22

अर्थात् वे स्त्रियां वेश्याएं हैं जो अपने शरीर को यौन-क्रियाओं के लिए बेचती हैं और इसे एक व्यवसाय बना लेती हैं । इस परिभाषा में मुख्यतः दो मुद्दे हैं — 1. यौन-क्रिया हेतु अपने शरीर को बेचने वाली स्त्रियां वेश्याएं हैं , और 2. वे स्त्रियां इस देह-व्यापार को ही अपना व्यवसाय बना लेती हैं ।

/6/ सामाजिक तथा नैतिक स्वास्थ्य सलाहकार समिति के अनुसार वेश्यावृत्ति के प्रमुख तीन आधार हैं — धन से संभोग का विनिमय, यौन-स्वच्छंदता तथा भावनात्मक उदासीनता । 23

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर हम वेश्यावृत्ति के निम्नलिखित तत्त्वों का अनुसंधान कर सकते हैं —

(क) व्यवसाय : वेश्यावृत्ति एक व्यवसाय के रूप में अपनायी जाती है । उसका मुख्य उद्देश्य आजीविका कमाना है ।

(ख) आर्थिक लाभ : वेश्यावृत्ति सदैव आर्थिक लाभ के लिए की जाती है । वह शारीरिक सुख के लिए नहीं है ।

(ग) भावना का अभाव : वेश्यावृत्ति में यौन-संबंध स्थापित करने वालों में परस्पर भावनात्मक संबंध नहीं होते । उनमें प्रेम व मानसिक लगाव नहीं होता । अतः वेश्यावृत्ति और दो प्रेमियों के बीच के अवैध यौन संबंध को कभी एक समान नहीं मानना चाहिए । भावना का जो लगाव प्रेमियों में होता है उसका यहां नितान्त अभाव होता है । यह एक प्रकार की शारीरिक यांत्रिक क्रिया है ।

(घ) अवैध सम्बन्ध : वेश्यावृत्ति में अवैध यौन संबंध होता है । कहीं-कहीं उसे कानूनन जुर्म भी माना गया है । फलतः वेश्याओं के अड्डों पर कई बार पुलिस की रेड पड़ती है और उनको पकड़ा भी जाता है ।

(च) रूप और यौवन का सौदा : वेश्याओं का यह व्यवसाय रूप और

यौवन पर चलता है । रूप और यौवन की समाप्ति पर उनका यह व्यवसाय भी समाप्त हो जाता है । हां , यह हो सकता है कि तब तक कोई वेश्या चकले की मालकिन हो जाए और दूसरी वेश्याओं को रखकर अपना व्यवसाय आगे बढ़ाए ।

{छ} भेदभाव का अभाव : इस व्यवसाय में जाति , धर्म , प्रान्त , प्रजाति, भाषा , रंग-रूप , ऊंच-नीच की भावना के बिना सभी प्रकार के लोगों के साथ यौन-संबंध स्थापित किये जाते हैं जो कि पैसा देने को तैयार हों । इस प्रकार सच्चा अद्वैत तो यहां चलता है । वेश्या सचमुच में वीतराग होती है ।

{ज} नैतिकता की सामान्य अवधारणा से भिन्न : वेश्यावृत्ति में पाप-पुण्य या नैतिकता-अनैतिकता को बीच में नहीं लाया जाता । समाज और उसके ठेकेदार भले ही उसे अनैतिक मानते हों , लेकिन वेश्या उसे अनैतिक नहीं मानती , बल्कि मेहनत की कमाई मानती है । इसमें शरीर और धन का आदान-प्रदान है । हां , उनकी अपनी कुछ नैतिक मान्यताएं और मूल्य होते हैं ।

वेश्यावृत्ति के कारण {Causes of Prostitution} :

वेश्यावृत्ति के लिए समाजशास्त्रियों , मनोवैज्ञानिकों , इतिहासवेत्ताओं तथा अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग प्रकार के कारणों का उल्लेख किया है । कुछ लोगों ने नारी की असहाय अवस्था को उसका कारण माना है , तो कुछ लोग प्रेम का अभाव और असुरक्षा की भावना को उसके कारण बताते हैं । जो लोग शारीरिक कारणों को वेश्यावृत्ति का आधार मानते हैं , उनका कहना है कि यौन-इच्छा मानव की मूलभूत प्रवृत्ति है {Basic instincts} है और उसकी उचित संतुष्टि न होने पर पुरुषों को वेश्यावृत्ति की ओर प्रेरित होना पड़ता है । कई बार निर्धनता भी स्त्रियों को वेश्या बनने पर मजबूर करती हैं । अभी कुछ महीनों पहिले "गुजरात समाचार" में एक सत्यकथा नाम-परिवर्तन के साथ प्रकाशित हुई थी ।

उसमें जो स्त्री अंततोगत्वा वेश्या हो जाती है उसके मूल कारणों में भीषण गरीबी ही है। स्त्री का पति बीमार पड़ता है। अन्तर्जातीय विवाह किया है, अतः कोई मदद करने वाला नहीं है। पति की बीमारी लंबी चलती है। स्त्री के पास दवाइयों के पैसे नहीं है। दवाइयों का व्यापारी उसकी इस मजबूरी का फायदा उठाते हुए उसके साथ संभोग करता है। ऐसा दो-चार बार होता है। एक दिन दोपहर में दुकान बन्द करके वह उसके साथ संभोग कर रहा था कि पुलिस के दो-चार लोग वहां आ धमकते हैं। वे भी उसके साथ वही करते हैं। बाद में पति जब ठीक हो जाता है, तब भी वे पुलिसवाले जब-तब टपकते हैं। जब उसके पति को इस बात का पता चलता है, तब वह उसको मारता-पिटता है, गंदी गालियां देता है और एक दिन वह स्वयं अपनी पत्नी के लिए ग्राहकों को ले आता है। परिणामतः उसे एक दिन कोठे पर बैठना पड़ता है। अभिप्राय यह कि किसी भी स्त्री के वेश्या हो जाने के कारणों की यदि ठीक से पड़ताल करेंगे तो उसके मूल में भीषण गरीबी और दरिद्रता ही नजर आयेंगे। वर्तमान युग में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण भी वेश्यावृत्ति को बढ़ावा मिला है। खर्चीली विवाह-पद्धति, कुछ जातियों में लड़कियों की कमी का होना, दहेज-प्रथा, अनमेल विवाह, विधवा-विवाह का अभाव, विवाहित स्त्री-पुरुषों में यौन-असंतोष, तनावपूर्ण जीवन, नौकरी के लिए स्त्रियों का बाहर निकलना जैसे अनेक कारण हैं जो वेश्यावृत्ति को जन्म दे रहे हैं। यहां पर कुछ विस्तार के साथ इनकी छानबीन का उपक्रम है।

(1) आर्थिक कारण (Economic factors) :

इसकी कुछ चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। यदि वेश्यावृत्ति के कारणों की तलाश करें तो ज्ञात होगा कि उसमें आर्थिक कारण ज्यादा उत्तरदायी है। जब स्त्रियां अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होती हैं और उन पर घर-परिवार या बच्चों का अत्यधिक बोझ होता है, और उनमें दूसरी कोई विशेष शैक्षिक योग्यता नहीं होती, तो मजबूरन उन्हें वेश्यावृत्ति का सहारा लेना पड़ता है। जगदम्बाप्रसाद

दीक्षित कृत उपन्यास "मुर्दाघर" में ऐसी अनेक वेश्याओं के जीवन को चित्रित किया गया है जिनको दो वक्त की रोटी के लिए यह घृणित व्यवसाय करना पड़ता है । लीग आफ नेशन्स की एडवाइजरी कमिटी का अभिमत है कि " गरीबी , कम स्थान और भीड़ तथा कम आय ये कुछ ऐसे कारण हैं जिनके कारण लड़कियां और औरतें वेश्यावृत्ति में प्रवृत्त होती हैं । [24] श्रीमान एस. कौण्ड्रेस का कहना है कि – " The foundation of Prostitution is hunger – भूख वेश्यावृत्ति की आधारशीला है । लीग आफ नेशन के द्वारा विभिन्न देशों का जो सर्वे कराया गया उससे ज्ञात हुआ कि गरीबी ही वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण है । इस सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आया कि 41 % वेश्याओं ने गरीबी और बेकारी के कारण इस व्यवसाय को अपनाया था । नागपुर की 100 वेश्याओं के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 36 % स्त्रियों ने अभाव , बेकारी एवं जीवन-यापन के साधनों की कमी के कारण वेश्या के व्यवसाय को अपनाया था ।[25] डा. एस.डी. पुनेकर ने मुंबई में जो सर्वेक्षण किया थे उससे ये नतीजे निकले थे कि 72 % मामलों में गरीबी ही वेश्यावृत्ति के मूल में थी ।[26]

कम आय अधिक व्यय तथा गरीबी के कारण बहुत-सी लड़कियाँ चोरी-छिपे वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर हो जाती हैं । शैलेश मटियानी की एक कहानी " एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " में करावा नामक दक्षिण भारतीय लड़की अपना तथा अपने भाई का पेट पालने के लिए मुंबई के दूसरे विस्तारों में जाकर धंधा करती है , ताकि उसके भाई रामन्ना को इस बात का पता न चले । जब किसी तरह यह बात प्रकट हो जाती है तब करावा रेल के नीचे कटकर आत्महत्या कर लेती है । शैलेश मटियानी के ही उपन्यासों "बोरीवली से बोरी-बन्दर तक " तथा " किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " इत्यादि में गरीबी के कारण वेश्यावृत्ति करने के कई उदाहरण मिलते हैं । इस प्रकार एक तो गरीबी और दरिद्रता के कारण लड़कियाँ और औरतें इस धंधे में राजी-राजी गैर-राजी आती हैं । उनके लिए यह एक मजबूरी है । परंतु

कुछ लड़कियां और स्त्रियां जीवन-स्तर को ऊपर उठाने की लालसा और इस उपभोक्ता-संस्कृति के चलते जो लोग " Lavishly " ~~xxxxxxxxxxx~~ जीने के लिए इस व्यवसाय को " Side-Business " के रूप में अपनाते हैं । इसमें इनको बहुत सरलता से और कम समय में काफी मोटी रकम मिलती है । ऐसी लड़कियों को आजकल "कालगर्ल" या " होटेल गर्ल्स " के नाम से जाना जाता है । ये लड़कियां कई बार एक-एक रात के लिए 50 से 60 रूपये तक चार्ज करती हैं । यहां एक बात ध्यातव्य है कि श्रेणी-विभाजन (Hierarchy) इस व्यवसाय में भी है । गरीब वेश्याएं कुछेक रूपयों के लिए धंधा करती हैं । "मुर्दाघर" में दो-दो , तीन-तीन रूपये के लिए देह को बेचनेवाली वेश्याएं मिलती हैं । इनको वेश्याओं की तृतीय श्रेणी में रख सकते हैं । ऊपर जिनका उल्लेख किया गया है ऐसी कार्लगर्ल्स को हम द्वितीय श्रेणी में रख सकते हैं । प्रथम श्रेणी के वेश्याएं वे हैं जो एक-एक रात के लिए लाखों रूपये वसूलती हैं । टाप क्लास "मोडेल्स :" और "बी" या "सी" ग्रेड फिल्मों की सिने-तारिकाएं इस वर्ग में आती हैं । बड़े शहरों में युनिवर्सिटी की होस्टेल्स में रहने वाली लड़कियां कई बार मौज-शौक , फैशन , शराब और ड्रग्स के चक्कर में "कालगर्ल " का काम करती हैं ; क्योंकि उनके अभिभावक से उन्हें उतनी रकम नहीं मिलती जिसमें उनके या सारे शौक पूरे हो सकें । कुछ साल पहले बड़ौदा विश्वविद्यालय की होस्टेल्स का सर्वे हुआ था तो कई लड़कियां इस व्यवसाय में पायी गयीं थी । उपर्युक्त तीनों ग्रेड की वेश्याएं देह का यह व्यापार धन के लिए ही करती हैं , अतः आर्थिक कारणों में ही इनका शुमार होता है । यहां एक तथ्य और गौरतलब है । वह यह कि कई बार अच्छे संपन्न परिवारों की गृहस्थिन औरतें भी इस व्यवसाय में आती हैं । कुछ ऐसे " Sexually Perverted " लोग होते हैं , जिनमें बड़े व्यापारी या बड़े नौकर-शाह लोग होते हैं , उनको ऐसी गृहस्थिन औरतों में विशेष रूचि होती है और तब "त्रितारक" या "पंचतारक" होटेल वाले ऐसी स्त्रियों को

"प्रोवाइड" करते हैं । हिमांशु श्रीवास्तव कृत उपन्यास "नदी फिर बह चली" में एक ऐसे आफिसर की बात आती है, जो किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान के किसी काम के लिए इस प्रकार की औरत की मांग करता है । एक बार ऐसा विचित्र संयोग होता है कि उसके सामने पेश होने वाली महिला उसकी अपनी बीबी थी । [27] पूर्ववर्ती अध्याय में सुश्री कुसुम मित्तल के लेख में दिल्ली महानगर की पुलिस रेड में पकड़ी गयी इस प्रकार की महिलाओं का उल्लेख है । [28]

§2§ नारी की आर्थिक पराश्रितता §Economic Dependence§ :

नारी की आर्थिक दृष्टया पराधीनता भी वेश्यावृत्ति का एक कारण है । हमारी समाज-व्यवस्था अभी कुछ वर्ष पूर्व तक ऐसी थी जिसमें नारी आर्थिक दृष्टि से परतंत्र होती थी । नारी-शिक्षा की बात 19वीं शताब्दी के बाद से शुरू होती है । अब स्त्रियां पढ़ने लगी हैं और आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो रही हैं, किन्तु यह परिदृश्य समूचे भारत का नहीं है । इसका प्रतिशत अधिक से अधिक 10 है । अभी भी ग्रामीण विस्तारों तथा नगरों और कस्बों में नारी अधिकांशतः आर्थिक रूप से पराश्रित ही है । फलतः उसे अपनी छोटी-से-छोटी जरूरत के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाने पड़ते हैं । अतः कई बार मानसिक तनाव या विद्रोह में वह ऐसा कदम उठा लेती है जो उसे वेश्यावृत्ति की ओर ले जाते हैं । "सेवासदन" उपन्यास की सुमन यदि आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होती तो उसे भोली के कोठे पर नहीं बैठना पड़ता ।

§3§ स्त्री का विपुलवासनावती होना §A state of Nympho§ :

मनोविज्ञान कहता है कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष में उम्रलायक होने पर काम या Sex की भावना जागृत होती है । यह एक सामान्य बात है । यदि ऐसा न हो तो उसे abnormal कहा जायेगा ।

अतः स्त्री में भी काम-वासना तो होती ही है । परन्तु किन्हीं कारणों से यदि किसी स्त्री में कामभावना का ~~अधिकाधिक~~ अतिरेक पाया जाता है, तो उसे " Nymphomania " कहा जाता है, और ऐसी स्त्री को " Nymphomaniac " या " Nympho " कहा जाता है । "निम्फोमेनिया से पीड़ित स्त्री में काम-वासना बहुत ही ज्यादा मात्रा में होती है । हिन्दी में ऐसी स्त्री के लिए "विपुल-वासनावती" शब्द का प्रयोग हुआ है । ऐसी स्त्रियों की काम-वासना कभी एक पुरुष से संतुष्ट नहीं होती और वे निरंतर नए-नए शिकारों की टोह में रहती है ।[29] इस संदर्भ में डा. इगे तथा डा. स्टेन हेगलर लिखते हैं - " यदि किसी में काम-वासना विपुल परिमाण में है तो उसे "Eroto maniac " कहा जाता है । यदि पुरुष में यह भावना हो तो उसे " Satyriasis " और यदि नारी में काम-वासना का वैपुल्य हो तो उसे " Nymphomanic " कहा जाता है । यथा —" Persuing an exaggeratedly active sex life is classified as Erotomania and a person who indulges in an exaggerated amount of sexual activity as an Erotomaniac. there is even a special term for male Erotomaniac namely satyriasis and one for female. Nymphomania " [30]

भगवतीचरण वर्मा कृत उपन्यास "रेखा" की रेखा भारद्वाज, "इमरतिया" (नागार्जुन) उपन्यास की गौरी सधुआइन, "जल टूटता हुआ " (डा. रामदरश मिश्र) की इलवा, "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " (शैलेश मटियानी) की नर्मदाबेन सेठानी आदि स्त्रियाँ "निम्फो" औरतें हैं और ऐसी स्त्रियाँ कालान्तर में ~~वेश्यावृत्ति~~ वेश्या-वृत्ति की ओर प्रवृत्त होती हैं, फर्क इतना है कि वे इस यौन-कर्म के लिए पैसा लेती नहीं है, बल्कि इसके लिए पुरुषों को पैसे देती हैं । इसमें गौरी अलग कैटेगरी में आती है । जमनिया धार्मिक मठ के बाबा अपनी न्यस्त हितों के लिए उसका उपयोग करते हैं । डा. पारुकान्त देसाई ने

किसा स्त्री के निम्फो होने के मनोवैज्ञानिक कारणों की पड़ताल करते हुए कहा है कि किसी स्त्री के यौवनकाल के प्रारंभ में उसे यदि योग्य पुरुष नहीं मिलता और उसकी यौन-तृप्ति योग्य मार्गों से नहीं होती तो एसी स्त्री निरंतर काम-क्षुधा से पीड़ित रहने के कारण "निम्फो" हो जाती है । रेखा और नर्मदाबेन सेठानी इसके उदाहरण है । [31]नर्मदा-बेन तो एक बार "Male prostitute" को भी "हायर" करती है । आगे यथेष्ट स्थान पर उसकी विस्तृत चर्चा होगी । [31]

§4§ विवाह - विच्छेद :

दुःखी वैवाहिक जीवन भी वेश्यावृत्ति के लिए उत्तादायी है । जिन लोगों का वैवाहिक सम्बन्ध टूट जाता है वे अपनी यौन-संतुष्टि के लिए वेश्यागमन का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं । यह बात पुरुष-पक्ष से सम्बद्ध है, किन्तु स्त्रियों में भी यह बात पायी जाती है । विवाह-विच्छेद होने के कारण ही "सेवासदन" की सुमन गौनहारिन वेश्या बन जाती है । विवाह-विच्छेद के कारण जब स्त्री के पास आजीविका हेतु और कोई अवलम्ब नहीं बचता है, तब वह निरुपाय होकर इस रास्ते पर चल पड़ती है ।

§5§ पारिवारिक परिस्थितियां :

कई बार स्वयं परिवार भी किसी लड़की को इस घृणित व्यवसाय में धकेल देने के लिए उत्तरदायी होता है । अधिकांश वेश्याएं अनैतिक एवं टूटे परिवारों से आती हैं । जिन परिवारों में माता-पिता की मृत्यु हो गयी हो, कोई संरक्षक न हो, मां सौतेली हो, पिता शराबी एवं व्यभिचारी हो, मां स्वयं वेश्या हो और पिता दलाल हो तो वे अपनी लड़कियों को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर कर देते हैं । जिन परिवारों में वेश्यावृत्ति परंपरागत रूप से चली आ रही हो उनमें लड़कियां मां के व्यवसाय को ग्रहण कर लेती हैं । परिवार का तनावपूर्ण वातावरण और बच्चों पर माता-पिता के नियंत्रण के अभाव की दशा में भी वेश्या-

वृत्ति पनपती है । "पतझड़ की आवाजें" , "बैठता हुआ आदमी " §निरूपमा सेवती § ; "नावें " § शशिप्रभा शास्त्री § आदि उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं ।

§6§ दहेज-प्रथा :

वेश्यावृत्ति के लिए बेx दहेज-प्रथा भी कारणभूत है । कई माता-पिता अपनी लड़कियों के विवाह के लिए दहेज की रकम नहीं जुटा पाते , फलतः बड़ी आयु तक वे लड़कियां अविवाहित रहती हैं , या कई बार अपात्र से विवाह कर लेना पड़ता है । ये दोनों स्थितियां यौन-तृप्ति के लिए लड़की को वेश्यावृत्ति के लिए प्रेरित करती हैं । कई बार तो दहेज के अभाव में लड़की आजीवन अविवाहित रह जाती है । ऐसी स्थिति में अपनी यौन-संतुष्टि के लिए उसे असामाजिक , अनैतिक व अवैध तरीके अपनाने पड़ते हैं । दहेज के अभाव के कारण "सेवासदन" की सुमन का ब्याह गदाधर जैसे दुहाजू व्यक्ति से होता है । इस विवाह से सुमन संतुष्ट नहीं है । उनमें जब-तब झगड़े होते रहते हैं और ये ही बातें सुमन को वेश्या बनने के लिए मजबूर कर देती हैं । "नावें" §शशिप्रभा शास्त्री § उपन्यास में नायिका मालती के पिता निवृत्त हो गए हैं । मालती उम्रलायक हो गयी है । पर दहेजाभाव में उसका ब्याह करना तो दूर , बल्कि भीतर-भीतर चाहते हैं कि मालती का ब्याह न हो , क्योंकि पूरे घर का निर्वाह मालती के कारण होता है । घरवालों को मालती की कमाई से मतलब है । वह कहां जाती है , क्या करती है , कई-कई दिनों तक क्यों गायब रहती है , इन बातों से उन्हें कोई मतलब नहीं है । मालती अपने बोस को समर्पित हो जाती है और एक तरह से उनकी रखैल के रूप में जीवन बिताती है । रखैल को भी वेश्या के अंतर्गत ही रखा जाता है । बिहार में कुलीन ब्राह्मण और कुलीन-विवाह की परंपरा है । जो मां-बाप गरीब होते हैं और दहेज या तिलक न जुटा पाने के कारण अपनी बेटी के का विवाह करने में असमर्थ होते हैं , वे उनका विवाह ऐसे कुलीन ब्राह्मणों से करवा देते

हैं । ये कुलीन ब्राह्मण कई-कई शादियां करते हैं और शादी करके वधू को अपने घर नहीं ले जाते , बल्कि वे अपने मां-बाप के घर ही रहती हैं और उनके ये कुलीन पति जब मन करे ससुराल की यात्रा करते रहते हैं । ऐसे में कई बार वे महीनों तक नदारद रहते हैं । पर विवाह हो जाने के कारण लड़की को यौन-तुष्टि की चोरी-चोरी इजाजत मिल जाती है । ये लड़कियां भी कई-कई लड़कों के संपर्क में आती हैं । और कभी किसी व्यक्ति से गर्भ रह जाता है तो घर वाले किसी रात को पत्तल बाहर फिंकवा देते हैं कि "पाहुने " (जमाई) आये थे , जिससे कि लड़की पर किसी प्रकार का लांछन न लगे । डा. भगवतीशरण मिश्र के उपन्यास में× " नदी नहीं मुड़ती " में इस प्रकार का एक प्रसंग मिलता है । गोकुल झा नामक कुलीन ब्राह्मण की पत्नी को गांव के किसी व्यक्ति का गर्भ रह जाता है । तब "पत्तल फिंकवाने " का यह नाटक किया गया था । इस पर गोकुल झा कहते हैं कि मैं पूरे गांव को बता दूंगा कि मैं नहीं आया था । उस पर उनका साला बिफरकर जो कहता है उससे सारी बात स्पष्ट हो जाती है —" और गांववाले क्या आपको अच्छा कहेंगे? दस-दस शादियां रचाकर और पत्नियों को उनके मायके छोड़कर बरसों तक झांकने तक नहीं जाना क्या अच्छी बात है ? यह तो कहिए कि हम लोगों ने एक माह का समय चढ़ते ही पत्तल आदि फिंकवाने का नाटक कर दोनों खानदानों की नाक कटने से बचा ली , वरना आप तो ... खैरियत इसीमें है कि आप सीधे मन से कल गांववालों के सामने इस बच्चे को गोद में खिलाएं और लोगों को बताएं कि साल भर पहले जब आप आए तो आपका यहां कितना सम्मान हुआ था और किस तरह दरभंगे की अदालत में एक मुकदमे की तारीख पड़ी होने से आपको सुबह-सुबह ही भागना पड़ा था ।"[32] यहां इस वेश्यावृत्ति को "अप्रकट वेश्यावृत्ति" के अन्तर्गत रखा जा सकता है ।

(7) विधवा-विवाह पर रोक : हमारे यहां उच्च जातियों में विधवा-विवाह का निषेध मिलता था । अब नवजागरण के बाद कहीं-कहीं विधवाओं का विवाह होने लगा है , परन्तु आज भी विधवा-विवाह को उच्चवर्णीय समाज

इज्जत की नजरों से नहीं देखता है । हमारे गांव ﴾ दंतेश्वर ﴿ में "बारैया" जाति के कुछ लोग लोग रहते हैं । वे स्वयं को "केशरिया" क्षत्रिय कहते हैं और उन लोगों में "विधवा-विवाह" का निषेध है । यदि कोई जवान लड़की भी विधवा हो जाए तो उसका दूसरा विवाह करवाने में उनकी नाक कटती है । राजस्थान में भी कई जातियों में विधवा-विवाह नहीं होता । अभी सद्य रीलिज़ फिल्म " डोर " में इस विषय का नग्न-यथार्थ चित्रण मिलता है । फिर ऐसी विधवाओं के साथ क्या होता है या हो सकता है हम उसकी कल्पना कर सकते हैं । कई बार तो उसके घर के लोग ही , ससुर-जेठ इत्यादि , उस पर गन्दे डोरे डालते हैं । नागार्जुन कृत "रतिनाथ की चाची " में विधवा-ब्राह्मणी की विवशता , गरीबी और शोषण को यथार्थतः चित्रित किया गया है । रात्रि के अन्धकार में एकान्त का लाभ लेकर उसके सतीत्व को भंग करने वाला तथा उस पर कलंक लगाने वाला स्वयं उसका देवर है । इसके कारण रतिनाथ की चाची को गर्भ रह जाता है तब वह ससुराल वालों के व्यंग्य-बाणों से बचने के लिए अपने मायके चली जाती है । उसकी मां बच्चा गिरवाने के लिए बुधना चमार की औरत को बुलाती है । तब वह जो कहती है वह पूरे उच्च समाज को बधिया उधेड़ देनेवाला है —" हमारी बिरादरी में किसीके पेट से आठ-आठ , नौ-नौ महीने का बच्चा निकालकर फैंक आने का रिवाज नहीं है और कैसा कलेजा होता है तुम लोगों का , मइया री मइया ।"[33] डा. रामदरश मिश्र के उपन्यास " सूखता हुआ तालाब" के कामरेड मोतीलाल अपनी "भयउ" ﴾ छोटे भाई की विधवा पत्नी ﴿ से ही फंसे हुए हैं । ऐसी विधवाओं को जब गर्भ ठहर जाता है तो उसको गिरवा दिया जाता है । उपन्यास में एक ऐसे "प्रेत" का जिक्र आता है जो ऐसे बच्चों की अगति से पैदा होते हैं ।[34] "जल टूटता हुआ" , " अलग अलग वैतरणी" , " मैला आंचल" , " आधागांव " जैसे ग्रामभित्तीय उपन्यासों में ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं ।

"उग्रतारा" ‖ नागार्जुन ‖ उपन्यास में लेखक उग्रतारा नामक एक युवा-विधवा की कथा रखते हैं । गांव के बूढ़े और पुराने लोग विधवा-विवाह के प्रखर विरोधी हैं । किन्तु गांव में नर्मदेश्वर की भाभी गांव के युवकों और युवतियों में नयी चेतना के प्राण फूंक देती है । उनके ही प्रयत्नों से उग्रतारा और कामेश्वर पहले प्रणय और फिर परिणय के लिए तैयार होते हैं, परन्तु पुरानी पीढ़ी को यह अच्छा नहीं लगता । गांव के वृद्ध लोगों में तो विधवाएं वरदान स्वरूप होती हैं । अतः वे भला किसी विधवा के उद्धार को कैसे बरदाश्त कर सकते हैं ? फलतः उन दोनों को गांव से भागना पड़ता है, परन्तु गांव के लोग पुलिस में झूठी रिपोर्ट लिखवाकर उन दोनों का पकड़वा देते हैं । उन पर झूठा मुकदमा चलाया जाता है । उगनी ‖ उग्रतारा‖ को तीन महीने की और कामेश्वर को नौ महीने की सजा हो जाती है । पुलिस तथा मढ़िया-सुंदरपुर के नर-राक्षस उगनी पर अनेक अत्याचार करते हैं और जबरदस्ती उसका विवाह भीखमसिंह नामक बूढ़े पुलिस के कर्मचारी से करवा दिया जाता है, जिससे वे जब चाहें उगनी के साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं । भीखमसिंह से उगनी को गर्भ भी रहता है, लेकिन जेल से छूटने के बाद ~~वह~~ कामेश्वर उसे पुलिस क्वार्टर से निकाल ले जाता है । कामेश्वर के साथ दुबारा भाग जाने पर वह भीखमसिंह को एक पत्र लिखती है — " मैंने अपना सबकुछ जिसे सौंप दिया था, उसीके साथ गांव से निकली थी । जिसके साथ गांव से निकली थी, वही मुझे आपके क्वार्टर से निकाल लाया है । उस आदमी का दिल बहुत बड़ा है । पराये गर्भ को ढोनेवाली अपनी प्रेमिका को फिर से बिना किसी हिचक के, उसने स्वीकार कर लिया है । उसने मुझसे शादी कर ली है । आपकी छाया में आठ महीने रही हूं, मन ही मन आपको पिता और चाचा मानती रही हूं और आगे भी वैसा ही मानती रहूंगी । मैं मजबूर थी, इसीसे आपको धोखा दिया । सिपाहीजी आप मुझे सारा जीवन याद रहेंगे ।"[35] इस प्रकार यहां हम देखते हैं कि समाज के ठेकेदारों ने तो उग्रतारा को वेश्या बना देना का पूरी तरह से इंतजाम कर ही दिया था, वह तो उग्रतारा-कामेश्वर का लौह-संकल्प था जो

वह उस राह की राही नहीं बनी । पर सभी लड़कियां उगनी की तरह भाग्यवान नहीं होती । कुछ लड़कियों के तो प्रेमी ही उन्हें इन रास्तों पर ढकेल देते हैं ।

§8§ दुखी वैवाहिक जीवन :

कई बार किसी के स्त्री के वेश्या हो जाने के कारणों में उसका दुखी वैवाहिक जीवन होता है । हररोज के कंकाश से मुक्ति पाने के लिए पत्नी कई बार घर छोड़कर भाग जाती है । वेश्याओं के दलाल ऐसी स्त्रियों की टोह में रहते हैं और वे उन्हें अंततः वेश्या होने पर मजबूर कर देते हैं । टाटा इन्स्टीट्यूट द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार 30 प्रतिशत स्त्रियों ने दुखी वैवाहिक जीवन के कारण ही वेश्यावृत्ति को अपनाया था ।[36] डा. बी. जोर्डर ने अपने एक अध्ययन में पाया कि 84 प्रतिशत वेश्याएं पहले विवाहित थीं और उन्होंने वेश्यावृत्ति को इसलिए अपनाया कि उन्हें परिवार में पारावार यातनाएं दी जाती थीं , या पति ने उन्हें छोड़ दिया या उन्हें विश्वासघात किया ।[37] "सेवासदन" उपन्यास की सुमन इसका एक ज्वलंत उदाहरण है । "मुर्दाघर" की मेना भी पति-प्रवंचना का शिकार हुई है । "मुर्दाघर" में तो कई ऐसी वेश्याएं हैं जिनके पति भी हैं और वे ही उनके लिए ग्राहक भी ले आते हैं ।

§9§ कुमार्ग में पड़ी हुई लड़कियां :

कई बार खराब वातावरण , बुरी सोबत आदि के कारण कुछ लड़कियों के कदम किशोरावस्था §Adolescent Period§ में ही बहक जाते हैं और वे अपनी पवित्रता खो बैठती हैं । कई बार अवैध संबंधों के कारण उन्हें किसीका गर्भ भी रह जाता है । तब ऐसी लड़कियों के सामने केवल दो ही रास्ते होते हैं — 1. आत्महत्या कर ले या 2. घर से भाग निकलें । जो लड़कियां आत्महत्या की हिम्मत नहीं जुटा पातीं वे दूसरा रास्ता अखितयार करती हैं और ऐसी लड़कियों की तलाश में इस व्यवसाय में पड़े हुए लोग रहते हैं जो उन्हें वेश्याओं के कोठों तक

पहुंचा देते हैं । "मुर्दाघर" उपन्यास की प्रायः वेश्याएं इस प्रकार इस व्यवसाय में आयी हैं । यदि हम वेश्याओं के कोठों का सर्वे करें तो ऐसी अनेक दर्दभरी कहानियां हमारे सामने आ सकती हैं ।

§10§ प्रेम-वंचना की शिकार लड़कियां :

कई बार कुछ लड़कियां कच्ची उम्र में प्रेम के चक्कर में पड़ जाती हैं । कुछ लोग जिनका देह-व्यापार से जुड़े लोगों से सम्बन्ध होता है वे ऐसी लड़कियों के भोलेपन और मासूमियत का फायदा उठाते हुए उनसे प्रेम का चक्कर चलाते हैं और फिर उनको घर से भाग निकलने के लिए प्रेरित करते हैं । प्रेमान्ध लड़कियों को अपने ये प्रेमी देवता-स्वरूप लगते हैं और एक दिन घर से रुपये-पैसे या गहने-लत्ते लेकर ये भाग खड़ी होती हैं । ये प्रेमी जो वस्तुतः लड़कियों के दलाल होते हैं उन्हें किसी कोठे पर बेच डालते हैं । बहुत पहले लगभग छठे दशक में एक फिल्म आयी थी — " सोलवां साल " । उसमें भी नायिका वहीदा रहमान को प्रेम-जाल में फंसाकर प्रतिनायक § खलनायक § भगा ले जाता है और उसका इरादा तो उसे बेच डालने का होता है , परन्तु नायिका के सद्भाग्य से यहां नायक § देवानंद § उसे बचा लेता है । " बोरीवली से बोरीबन्दर तक " § शैलेश मटियानी § उपन्यास में नूर नामक एक वेश्या की कहानी आती है , जो मूलतः इलाहाबाद तरफ की थी , उसके प्रेमी ने उसको बम्बई के सब्ज बाग दिखाये थे । उसे फिल्म-हीरोइन बनाने के सपने दिखाये थे पर बम्बई लाकर वह उसे एक बाई को बेच देता है । "मुर्दाघर" की मैना की भी लगभग यही कहानी है । इसी उपन्यास में एक काठियावाड़ से भागी हुई लड़की का जिक्र भी आया है । उसे भी उसका प्रेमी भगाकर लाया था और वह भी प्रेम-वंचना की शिकार थी , किन्तु सद्भाग्य से उसे मैना मिल जाती है और उसे वह वेश्या होने से बचा लेती है ।[38]

§11§ माता-पिता के संस्कार : यदि माता-पिता के संस्कार अच्छे नहीं है

तो उसका प्रभाव भी लड़कियों पर पड़ता है । अनैतिक एवं व्यभिचारी माता-पिता के कुसंस्कार उनकी लड़कियों पर पड़ते ही हैं जो कभी-कभी उन्हें वेश्यावृत्ति की ओर ले जाते हैं । "नाच्यौ बहुत गोपाल " ‌(अमृतलाल नागर) की निर्गुण पर उसकी माँ के संस्कारों का दुष्प्रभाव पाया जाता है । उसकी माँ के कई पुरुषों से सम्बन्ध है और बहुत-सी गोपनीय बातों का पता निर्गुण को छोटी-सी उम्र में ही हो जाता है । उसमें जो असामान्य प्रकार की कामुकता पाई जाती है उसका भी यही कारण है । अमेरिकन सामाजिक स्वास्थ्य संघ का मत है कि अत्यधिक कामुकता (Nymphomania) लड़कियों को वेश्यावृत्ति की ओर खींच ले जाती है ।[39]

(12) पति की नपुंसकता :

यदि किसी स्त्री में कामावेग ज्यादा हो और उसका पति नपुंसक हो तो ऐसी स्त्री भी अपनी अतृप्त यौन-इच्छाओं की पूर्ति के लिए मर्यादाहीन होकर अन्य पुरुषों से अवैध यौन-संबंध स्थापित कर लेती है । "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदाबेन सेठानी अपने कालेज काल में एक युवक को प्यार करती थी , परंतु उनका ब्याह होता है सेठ नगीनदास से जो अपनी जवानी में कई चेक काट चुके थे और उनके प्रेम के खातों में बैलेन्स "नील" था । सेठ को भी इस बात का ख्याल था । इसलिए समाज में अपनी इज्जत बनी रहे इस हेतु से वे नर्मदाबेन के लिए अपने बंगले पर ही उचित व्यवस्था करवा देते हैं । आगे चलकर स्वयं सेठानी इस मामले में दक्ष हो जाती है और नये-नये शिकार फांसती हैं । इस संदर्भ में लेखक की टिप्पणी देखिए — "और उसके पास दौलत की ताकत थी । उसने अब दौलत को अपने लिए इस्तेमाल करना सीखा और इस्तेमाल करने का ऐसा तरीका सीखा कि नगीनभाई को भी कोई एतराज नहीं रहा । उसने मंदिर बनवाया , पुजारी अपनी पसंद का रखा । उसने "अनाथालय " खोला , मैनेजर अपनी चाहत का रखा । उसने गर्ल्स स्कूल खुलवाया , तो उसके प्रिन्सिपल को अपनी मोहब्बत के स्कूल में भर्ती कर दिया ।"[40]

कई बार ऐसा भी होता है कि पुरुष और स्त्री की उम्र में बहुत ज्यादा फासला हो जाने के कारण पुरुष अपनी स्त्री के सामने स्वयं को कमजोर पाता है । फलतः वह उसकी उद्दाम काम-वासना को तृप्त करने में असमर्थ साबित होता है । तब भी स्त्री में यौन-भटकाव आता है जो अन्ततः उसे वेश्याजीवन की ओर ले जाता है । भगवती-चरण वर्मा कृत उपन्यास " रेखा " के रेखा भावावेश में अपने पिता की उम्र के प्रोफेसर रेवाशंकर से विवाह कर लेती है और शुरू के कुछ वर्ष तो ठीकठाक जाते हैं पर एक बार रेखा अपने भाई के मित्र के संपर्क में आती है और उसके साथ उसका यौन-संबंध स्थापित होता है , तब पहली बार रेखा को इस बात का अहसास होता है कि प्रोफेसर से शादी करके उसने क्या खोया है । फिर तो एक-एक करके उसके जीवन में पांच पुरुष आते हैं और उसका जीवन एक पुंश्चली-सा बन जाता है । 41

§13§ अनैतिक व्यापार :
===============

जिस्मफरोशी के व्यवसाय को अनैतिक व्यापार , देह का व्यापार आदि कहा जाता है और यह व्यापार दुनिया के सभी देशों में आदि-अनादि काल से चल रहा है और कोम्युनिकेशन के साधनों के विकास के साथ तो ये दिन-दुनी-रात चौगुनी प्रगति कर रहा है । मध्यकाल में राजा-महाराजाओं , सामंतों , सरदारों , जागीरदारों के हरम के लिए कुछ लोग तैनात होते थे और वे बाकायदा जहां-जहां भी उन्हें कोई सुंदर लड़की नज़र आती थी , येन-केन-प्रकारेण उसे उस हरम में पहुंचा देते थे । मुंबई , ~~कलकत्ता~~ कलकत्ता , चेन्नई , बेंगलोर , हैदराबाद , अहमदाबाद , दिल्ली , कानपुर , बनारस आदि शहरों में वेश्यालय होते हैं और उन वेश्यालयों के दलाल सफेदपोश बाना धारण करके , या साधु-संत बनकर , या कोई और भेश धारण करके भोली-भाली लड़कियों को फुसलाकर उन वेश्यालयों तक खींच ले आते हैं और एक बार जो लड़की यहां आ जाती है , उसका वहां से बाहर निकलना लगभग नामुमकिन होता है । जेल से लोग फरार हो जाते हैं , पर इन जेलों से मुक्ति तो मौत ही से मिलती है । दिनांक 28-10- 06 के आजकल के विशेष

कार्यक्रम में बताया गया था कि कैसे कुछ लोग सुंदर और आकर्षक देहयष्टि वाली लड़कियों को दुबई और अन्य गल्फ कन्ट्रिज में विविध आकर्षणों से भेज देते हैं जहां उन्हें देह-व्यापार के लिए मजबूर किया जाता है। अभी कुछ वर्ष पूर्व एक रैकेट का पर्दाफाश हुआ था जिसमें हैदराबाद की कमसीन लड़कियों को प्रौढ़ और बूढ़े अरब व्यापारियों के बेच दी जाती थीं। मेरे निर्देशक डा. पारूकान्त देसाई की " हैदराबाद की एक सांझ " नामक लम्बी कविता में इस संदर्भ में कुछ पंक्तियां मिलती हैं —

" स्वर्ण-मृग के छलावे से सीता कभी अपहृत हुई थी
आज भी वह स्वर्णमृग है
सीताएं बन अमीना या हसीना
कमला या रोशनी या रूपया
आज भी अपहृत हुई हैं। " 42

आज भी स्त्रियों और लड़कियों को फुसलाकर, उन्हें सब्जबाग दिखलाकर, गुण्डे, बदमाश, दलाल, वेश्याएं, कुट्टनियां, मालजादे, भड़वे तथा सेठ-~~साहूकार~~ साहूकार उनको किसी-न-किसी तरह वेश्यागृहों तक पहुंचाने में लगे हुए हैं। उनका "नेटवर्क" बहुत ही जोरदार होता है। कहाँ किसकी नब्ज़ दुख रही है उनको तुरन्त पता चल जाता है और अपनी चिकनी-चुपडी बातों की जाल में उनको वे फंसाकर ही दम लेते हैं।

वैसे तो ~~ऋषभचरण~~ जैन के "हिज हाईनेस", " हर हाईनेस ", "मयखाना", " तीन इक्के ", "चम्पाकली", " जनानी सवारियां " आदि सभी उपन्यासों में उच्च-वर्ग के लोगों की विलासिता और उसी सबब वेश्यावृत्ति आदि का वर्णन मिलता है; लेकिन उनका "जनानी सवारियां " उपन्यास तो इसी विषय-वस्तु को लेकर लिखा गया है कि वेश्यागृहों में ये "माल" कैसे पहुंचाया जाता है। इस उपन्यास का नायक या खलनायक रामजीदास नामक एक बर्दाफरोश शख्स है। रक्त का व्यापार करने वालों को बुर्दाफरोश कहा जाता है। इस उपन्यास को पहले "बुर्दाफरोश" नाम ही दिया गया था।[43] अर्थात् इसमें "रक्त के व्यापार " को, स्त्री की इज्जत-असमत के व्यापार को, उसके

नाना हथकंडों और उसके अड्डों को उनके यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है । उपन्यास सात अध्याय में विभक्त हैं पर इन सबके केन्द्र में रामजीदास है । इन सात अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं — लाला लोग, बेचारी बच्चियां, झांसापट्टी, दुकानदारी, हाथ-पैर, ठिकाने और जनानी सवारियां । इन सभी अध्यायों में इन बुर्दाफरोशी की कहानियां हैं । "हाथ-पैर" में इस व्यवसाय के पूरे तंत्र को बताया गया है । इस अध्याय में यह बताया गया है कि इस व्यवसाय में कौन-कौन लोग रामजीदास के सहायक हैं । लेखक के ही शब्दों में "यही उनके हाथ-पैर हैं, इन्हीं की मदद से उनके रोजगार की बेल फलती है, इन्हीं के बल पर उन्हें घर बैठे "माल" हासिल होते हैं । यह उनके हाली-मवाली हैं और ये ही उनके अनुचर हैं, ये ही उनके यार हैं और ये ही मददगार । इन्हीं के जरिये उनकी पहुंच उन तहखानों तक हो जाती है, जहां सूरज की किरण भी जाते हुए डरती है । इन्हीं के सहारे ये लोग उन बातों को जान लेते हैं, जिन्हें सिर्फ ईश्वर ही जानता है । ये ही उनके हाथ-पैर हैं ।" 44 इन हाथ-पैरों में कोई आश्रम का संचालक होता है, तो कोई मंदिर का पुजारी, कोई साधु बाबा तो कोई जमाना खायी हुई तजुर्बेकार बुढ़िया ।

(5) बुरा पड़ोस :

कई बार बुरे पड़ोस का भी बड़ा खराब प्रभाव बच्चियों के संस्कारों पर पड़ता है । पड़ोसी किसी भी घर की तमाम अच्छी-बुरी बातों को जानता है और लिहाजा वक्त आने पर वह उसका इस्तेमाल करता है । बच्चे यदि मां-बाप से नाराज होते हैं, तो ऐसे लोग मीठी छुरी चलाने का काम करते हैं । "जनानी सवारियां" उपन्यास में जिनको हाथ-पैर कहा गया है, इनमें बुरे पड़ोसी का भी शुमार है । गन्दी बस्तियों, नाचघरों, वेश्याओं के अड्डों, जुआघरों और शराबखानों के पास रहने वाले परिवारों की लड़कियों

पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है । यहां जो मनचले और आवारा किस्म के लोग आते हैं उनका भी बड़ा बुरा प्रभाव कच्ची उम्र के बच्चों पर पड़ता है । "सेवासदन" की सुमन पर वेश्या भोली का जो प्रभाव पड़ता है उसका xxxx भी एक कारण यही है । सुमन यदि अच्छे विस्तार में होती तो कदाचित उसके चरित्र की परिणति दूसरे प्रकार की होती । "पतझड़ की आवाजें " (निरूपमा सेवती) की नायिका अनुभा रमनेश नामक एक युवक को चाहती है । उससे उसकी सगाई तक हो जाती है, लेकिन बाद में उसकी सगाई इस कारण टूटती है कि आर्थिक अभावों के कारण अनुभा के परिवार को ऐसे गन्दे स्थान पर रहना पड़ता है, जिसके ऊपर के तल्ले पर वेश्याओं का कोठा था । रमनेश अनुभा से कहता है कि मेरे मित्र हंसते हैं कि तुम्हारी फियान्सी कैसी जगह पर रहती है ।[45] "अनारो", " बसंती", "मुर्दाघर", "बंटता हुआ आदमी ", " दो लड़कियां", "दिनांत", "सलाम आखिरी" (उपन्यासकार क्रमशः मंजुल भगत, भीष्म साहनी, जगदम्बाप्रसाद दीक्षित, निरूपमा सेवती, रजनी पनिकर, शीला रोहेकर और मधु कांकरिया) आदि उपन्यासों में इस प्रकार की गन्दी बस्तियों का जिक्र आता है ।

(15) अनमेल विवाह :

अनमेल विवाह के कारण दाम्पत्य-जीवन खंडित होते हैं । ऐसे में यदि आग में घी देनेवाला कोई मिल जाता है तो किसी भी लड़की या स्त्री का गुमराह होना स्वाभाविक है । इस अनमेल विवाह के पीछे भी कई कारण हैं और मुख्य कारण है — दहेज प्रथा । गरीब मां-बाप अपनी लाड़ली बेटियों के लिए दहेज नहीं जुटा पाते । फलतः कई बार ऐसी लड़कियों को दुहाजू-तिहाजू, प्रौढ़ या बूढ़े के साथ ब्याह दी जाती हैं । मन का मीत न मिलने के कारण मानसिक असंतुष्टि तो होती ही है, उसमें शारीरिक असंतुष्टि ईंधन का काम करती है । वृद्ध-विवाह का एक कारण (वृद्धों के युवा लड़कियों से

विवाह ‡ विधवा-विवाह का विरोध भी है । यदि विधवाओं को अपने समवयस्क विधुरों से विवाह होता तो कदाचित बहुत-सी सुमनें, बहुत-सी निर्मलाएं, बहुत-सी रतनें, बहुत-सी निर्गुण अपनी अभिशप्त जिंदगी से बच जातीं ।‡ उपन्यास क्रमशः सेवासदन, निर्मला, गबन, नाच्यौ बहुत गोपाल ‡ । "रेखा" उपन्यास की रेखा का विवाह भी अनमेल विवाह है, किन्तु वहां कोई आर्थिक कारण न होकर किशोरावस्था की भावुकता कारणभूत है । रेखा एम.ए. की छात्रा है, अतः 20-22 साल की है और प्रोफेसर प्रभाशंकर 54-55 के । इस अनमेल विवाह के कारण ही रेखा की भटकन शुरू हो जाती है । चीनी दार्शनिक कन्फूशियस का एक कथन कहीं पढ़ने में आया था — "If a person of forty or fifty marries a girl of twenty-twenty two, then one thing is dead sure that he marries for others." अर्थात् यदि कोई 40-50 साल का व्यक्ति 20-22 साल की लड़की से विवाह करता है, तो यह निश्चित है कि वह विवाह दूसरों के लिए कर रहा है । रेखा के साथ भी यही होता है ।

‡16‡ दिमागी कमजोरी :

सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों के दिमाग कमजोर होते हैं । लीग आफ नेशन्स की एडवाइजरी कमिटी के अध्ययन में पाया गया कि वेश्यावृत्ति करने वाली एक-तिहाई स्त्रियों का स्वभाव एवं मस्तिष्क असामान्य ‡ Abnormal ‡ था । उनमें ऐसे अवगुण थे जो दुख एवं असफलता के लिए उत्तरदायी होते हैं । उनमें आत्मविश्वास की कमी तथा प्रेम का अभाव आदि पाया जाता है ।[46] किन्तु यहां एक बात की संभावना है कि ऐसे माहौल में रहते-रहते उनकी यह स्थिति हो गयी हो । हां, इतना तय है कि दिमागी तौर पर ~~कमजोर~~ कमजोर ‡ Mentally Retarded ‡ लड़कियों को वेश्या बनाना आसान होता है । भीष्म साहनी कृत "कड़ियां" उपन्यास में हम यह देख सकते हैं ।

§17§ सामाजिक कुरीतियाँ :

भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ, जैसे दहेज, शादी, सगाई, मुंडन, मृत्यु भोज आदि में लोग हैसियत से ज्यादा खर्च करते हैं। इन खर्चों के लिए वे कर्ज लेते हैं और अन्ततः ये कर्ज इतना ज्यादा हो जाता है कि इनको चुकाने के लिए स्त्री या पुत्री द्वारा यौन व्यभिचार करवाया जाता है।

§18§ आसान ऋण :

पहले बैंकों से कर्ज लेने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते थे। पहले तो उस बैंक के शेयर्स खरीदो, फिर दो ~~§§§§§§§~~ गैरेण्टी ढूंढो और तब कहीं जाकर पाँच हजार या दश हजार का कर्जा मिलता था। परन्तु इधर मुक्त व्यापार, मल्टीनेशनल्स आदि के कारण बैंकों से बहुत आसान तरीकों से ऋण मिल जाता है। कोई भी चीज खरीदनी हो तो इनस्टालमेण्ट्स से खरीद सकते हैं। लोगबाग फ्रीज, वाशिंग मशिन्स, टुव्हीलर्स और कार तक बैंक ऋण से खरीदते हैं। इसमें कई बार हैसियत से ज्यादा कर्ज हो जाता है। सारी तनख्वाह या आमदनी इनस्टालमेण्ट्स चुकाने में ही खर्च हो जाती है।×§§ उठे हुए जीवन-स्तर के लिए और कर्ज करना पड़ता है और अन्ततः उसके भुगतान के लिए यौन-व्यभिचार का आसरा लेना पड़ता है।

§19§ युद्ध :

युद्ध में पुरुष मारे जाते हैं। इससे लड़कियाँ अनाथ व विधवा हो जाती हैं। उनके पास जीवन-यापन का कोई दूसरा रास्ता या साधन नहीं होता, फलतः उनको ~~वेश्य~~ वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ती है। स्त्रियों की संख्या बढ़ने और पुरुषों की घट जाने से यौन संतुलन बिगड़ जाता है। अध्ययन कहते हैं कि प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वेश्याओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई थी।[47]

§20§ डा. एस.डी. पुणेकर की रिपोर्ट के :

टाटा इस्टि× इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज ने डा. पुणेकर की अध्यक्षता में एक सर्वेक्षण करवाया था । उस सर्वे मेंमुंबई में वेश्यावृत्ति के लिए जो कारण बताए गए हैं उन्हें निम्नलिखित सात भागों में बांटा गया है — /1/ दूषित प्रभाव , दूषित पर्यावरण तथा निम्न जीवन मूल्य , /2/ अज्ञान×× अज्ञान , /3/ निर्धनता और निराश्रयता , /4/ सगे - सम्बन्धियों , पति या संरक्षक द्वारा दुर्व्यवहार ,××&××× उपेक्षा और &तिरस्कार× तिरस्कार /5/ छल-कपट , दूषित यौन संबंध , अपहरण , बलात्कार , अवैध गर्भधारण ; /6/ दुखी वैवाहिक जीवन , पति द्वारा विश्वासघात और परित्याग , /7/ यौन आवश्यकता और &उत्सुकता×& उत्सुकता । [48]

§21§ विलियम बोंगर का मत :

डच समाजशास्त्री विलियम बोंगर ने वेश्यावृत्ति के लिए निम्नलिखित पांच कारणों को उत्तरदायी बताया है — /1/ अनैतिक वातावरण , /2/ जल्दी नौकरी पर लगना , /3/ अवैध मातृत्व , /4/ गरीबी , /5/ निहित स्वार्थ । [49]

§22§ विडियो सीडी का दुरूपयोग :

यदि हम पिछले कुछ वर्षों का अखबारी अध्ययन करें तो ज्ञात होगा कि आजकल जो क्लबों , बारों , डिस्को सेंटरों आदि में युवक-युवती मिलते हैं उनमें कई बार किसी युवती को कुछ पिला दिया जाता है और बेहोशी या निम-बेहोशी की अवस्था में उसकी कुछ नग्न तस्वीरें खम×× खींच ली जाती हैं या उसकी वीडियो सीडी तैयार कर ली जाती है । बाद में इसके आधार पर उस युवती को ब्लेकमेल किया जाता है , उसको अनेक बार बलात्कृत किया जाता है और अन्ततः उसे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर और विवश किया जाता है । अभी पिछले कुछ वर्षों या महीनों में सेक्स स्केण्डल आये हैं ,

विशेषतः जम्मू-श्रीनगर सेक्स स्कैण्डल , उनमें इसी तरीके से लड़कियों को वेश्या बनने पर मजबूर किया xxxxहैx गया है । हिमांशु जोशी कृत उपन्यास " छाया मत छूना मन " में नायिका की बहन कंचन को इसी तरीके से वेश्या बनाया गया है ।

वेश्यावृत्ति के कुछ अन्य कारक :

वेश्यावृत्ति के अन्य कारकों में हम औद्योगीकरण , नगरीकरण, मनोवैज्ञानिक कारक , धार्मिक कारक आदि की गणना कर सकते हैं ।

(क) औद्योगीकरण :

औद्योगीकरण के कारण कृषि उद्योग और कुटीर उद्योग नष्ट हुए हैं । गांवों से व्यवसाय की खोज में लोग नगरों में आते हैं । नगरों में मकानों की समस्या के कारण पुरुष वर्ग अपने परिवार और बीबी-बच्चों को छोड़कर आते हैं । बिहार , यू.पी. राजस्थान , हिमाचल प्रदेश आदि दूर-दूर के प्रदेशों से लोग कलकत्ता , मुंबई , जमशेदपुर आदि शहरों में जाते हैं और कई बार तो अपने बीबी-बच्चों से मिले उन्हें साल भर से ज्यादा समय हो जाता है । ऐसे स्थिति में अपनी यौन-संतुष्टि के लिए उन्हें वेश्याओं के पास जाना पड़ता है । ट्रक के ड्रायवर-क्लीनर आदि कई बार अनेक दिनों तथा महीनों तक अपनी बीबियों को नहीं मिल पाते , परिणामस्वरूप नेशनल हाई वे पर जहां उनके विश्राम-स्थल होते हैं वहां वेश्याओं की झोंपड़पट्टियां भी बन जाती हैं । गांव में जो मान-मर्यादा या बुजुर्गों की शरम या लिहाज होता था , उसके अभाव में युवक बहक जाते हैं । उधर उनकी पत्नियां भी कई बार यौन-संतुष्टि के दूसरे मार्ग ढूंढ लेती हैं xxxx फलतः xxx वेश्यावृत्ति बढ़ती है । जब नये उद्योग-धंधे स्थापित होते हैं , तो उनके साथ बाहर से , दूसरे प्रदेशों से कई लोग आते हैं । वे वहां के ग्रामीण या कस्बाई वातावरण को भी दूषित करते हैं । इन सब तथ्यों का बड़ा स्वाभाविक , यथार्थ चित्रण "सांप और सीढ़ी" (गुल-शेरखान शानी) ; " नदी फिर बह चली " (हिमांशु श्रीवास्तव)

"बोरीवली से बोरीबन्दर तक " § शैलेश मटियानी § ; "शहर में घूमता आईना " , " दिल एक सादा कागज " § डा. राही मासूम रजा § आदि उपन्यासों में हुआ है । ध्यान रहे प्रेमचंद कृत उपन्यास "रंगभूमि" का सूरदास पांडेपुर में सिगरेट के कारखाने का जो विरोध करता है उसका एक कारण यह भी है । सूरदास कहता है —" साहब किरस्तान हैं । धरमसाले में तम्बाकू के गोदाम बनायेंगे , मंदिर में उनके मजदूर सोयेंगे , कुंए पर उनके मजदूरों का अड्डा होगा , बहू-बेटियां पानी भरने न जा सकेंगी । ... ताड़ी शराब का परचार बढ़ जायगा , कसबिनें भी तो आकर बस जायेंगी , परदेसी आदमी हमारी बहू-बेटियों को घूरेंगे । कितना अधरम होगा ? दिहात के किसान अपना काम छोड़कर मजूरी के लालच से दौड़ेंगे , यहां बुरी-बुरी बातें सीखेंगे , और अपने बुरे आचरण अपने गांव में फैलायेंगे । दिहातों की लड़कियां बहुएं मजूरी करने आयेंगी , और यहां पैसे के लोभ में अपना धरम बिगाडेंगी ।" [50]

पत्नी की अनुपस्थिति पुरुष को वेश्यागमन के लिए प्रेरित करती है ; तो दूसरी तरफ महंगाई , आवास की समस्या , उच्च जीवन का मोह , अनैतिक वातावरण आदि स्त्रियों को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करते हैं । डा. राधाकमल मुखर्जी के अनुसार बंगाल की जूट मिलों में काम करने वाली प्रत्येक तीन स्त्रियों में से एक स्त्री तथा हुगली से आने वाली प्रत्येक चार स्त्रियों में से एक स्त्री वेश्यावृत्ति करती थीं । वह आगे लिखते हैं —" भारतीय औद्योगिक केन्द्रों की इन असंख्य गंदी बस्तियों में मनुष्यता का निस्संदेह ही गला घोंटा जाता है , नारीत्व का अपमान होता है और शिशु को प्रारंभ से ही विषपान कराया जाता है ।" [51]

§ड§ <u>नगरीकरण</u> :

"नगर" के लिए अंग्रेजी में " CITY " शब्द है , जो मूल लैटिन भाषा के " CIVITAS " से व्युत्पन्न हुआ है । " Civitas " का अर्थ है नागरिकता ।[52] सामान्यतौर पर

ऐसा माना जाता है कि गांव के लोग अनपढ़-गंवार और असभ्य होते हैं और नगर के लोग सुशिक्षित , सभ्य और संस्कारी होते हैं । जो नगर में रहता था उसे नागरिक कहते थे , किन्तु अब इस× इस शब्द के अर्थ में विस्तार हो गया है और देश अब देश के किसी भी व्यक्त व्यक्ति को अब नागरिक कहते हैं , चाहे वह गांव हो का हो या नगर का । वैर नगरीकरण शब्द नगर से ही व्युत्पन्न हुआ है और सामान्यतः नगरों के उद्भव , विकास , प्रसार एवं पुनर्गठन को नगरीकरण (Urbanization) कहा जाता है । हमारे देश में बनारस (वाराणसी) , मथुरा , हरद्वार , दिल्ली (हस्तिनापुर) , उज्जैन आदि प्राचीन नगर थे । कालान्तर में और भी कई नये नगर अस्तित्व में आये थे । आज का महानगर मुंबई आज से चार-सौ पांच सौ साल पहले मछुआरों की एक छोटी बस्ती के रूप में था । योरोप में उत्क्रान्ति के बाद औद्योगिक क्रान्ति हुई । हमारे यहां उन्नीसवीं शताब्दी के बाद औद्योगिक विकास में निरंतर विकास होता गया । इस औद्योगीकरश (Industrialization) के कारण कई नये औद्योगिक नगर अस्तित्व में आये , जैसे जमशेदपुर , बोकारो , राउरकेला आदि । एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1901 में नगरीय क्षेत्र में जनसंख्या का प्रतिशत 10.84 था , जो सन् 1981 में बढ़ते-बढ़ते 23.31 प्रतिशत हो गया ।[53] इस सर्वेक्षण को भी दूसरे 25-26 साल हो गये और नगरीकरण की प्रक्रिया तो निरंतर चालु ही है । नगरीकरण के कारण पारिवारिक विघटन , अपराधों में वृद्धि , मानसिक तनाव , गन्दी बस्तियों के कारण बिगड़ता पर्यावरण आदि समस्याएं सामने आती हैं । इन सबमें सबसे बड़ी समस्या वेश्यावृत्ति की है । नगरों में यह समस्या विकट से विकट हो रही है । समाजशास्त्रियों , मनोवैज्ञानिकों आदि सभी विशेषज्ञों का कहना है कि नगरीकरण के कारण वेश्याओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है ।

(क) मनोवैज्ञानिक कारक :

मंदबुद्धि , मनोविकार एवं नवीन अनुभव की चाह आदि मानसिक कारक भी वेश्यावृत्ति को जन्म देते हैं । इस दिशा में किए गए अनेक अनुसंधान इस बात की पुष्टि करते हैं कि कई वेश्याएं मंद बुद्धि की पाई गई थीं । जब उन्हें बदमाशों और गुंडों द्वारा बहकाया और फुसलाया जाता है तो वे अपने विवेक से यह निर्णय नहीं कर पातीं हैं कि उनमें सत्यता का कितना अंश है और वे उनके चक्कर में आकर अपना जीवन बरबाद कर लेती हैं । सन् 1919 में अमरीकन सोशल हाईजीन एसोसिएशन ने अपने अध्ययन में 33 % वेश्याओं को मन्द बुद्धि पाया ।[54] परिवार में प्रेम एवं स्नेह का अभाव भी लड़कियों में मनोविकृति को पैदा करता है । ऐसी लड़कियां अपना मानसिक संतुलन खो बैठती हैं और जुआ, मद्यपान एवं वेश्यावृत्ति को अपना लेती हैं । " मछली मरी हुई " (राजकमल चौधरी) की कल्याणी इसका एक अच्छा उदाहरण है । डा. एडवर्ड ग्लोवर का अभिमत है कि स्त्रियों में पुरुष के प्रति पायी जानेवाली प्रतिशोध की भावना भी वेश्यावृत्ति के लिए जिम्मेदार है । जब स्त्रियां यह महसूस करती हैं कि पुरुष उनके साथ छल-कपट कर रहे हैं , उन पर अत्याचार कर रहे हैं , उन्हें धोखा देकर उनसे पाप कार्य करवा रहे हैं तो वे प्रतिशोध की ज्वाला में भभक उठती हैं । पुरुष जाति को लूटने , उनमें रोग फैलाने , उनकी सुखी गृहस्थी में आग लगाने एवं उन्हें जाल में फंसाने के लिए वे वेश्यावृत्ति अपना लेती हैं ।[55] एलिस तथा फ्रायड आदि मनोवैज्ञानिक वेश्यावृत्ति के लिए काम-वासना एवं नये अनुभव की इच्छा को भी उत्तरदायी मानते हैं । पांडेय बेचन शर्मा "उग्र" के उपन्यास " बुधुआ की बेटी " की रधिया पर गांव के जमींदार का लड़का बलात्कार करता है । इसकी इतनी तीव्र प्रतिक्रिया रधिया में होती है कि वह गांव के युवकों को ललचाकर अपने प्रेम जाल में फंसाती है और फिर उन्हें तड़पता हुआ छोड़कर किसी दूसरे को प्यार करने लगती है । इस प्रकार युवकों को तड़पा-तड़पा कर वह पागल कर देती है । बलात्कृत होने के कारण उसमें जो "सैडिस्ट "

मनोवृत्ति पैदा होती है उसके रहते वह समूची पुरुष जाति के साथ उसका प्रतिशोध लेती है ।[56]

(घ) धार्मिक कारक :

धार्मिक कारक भी वेश्यावृत्ति का एक मुख्य कारण और स्रोत है । दक्षिण भारत के मंदिरों में देवदासी प्रथा का प्रचलन रहा है । संतान में पुत्र की कामना करने वाले स्त्री-पुरुष ऐसी मनौती रखते हैं कि यदि उनकी मनोकामना पूर्ण हुई और यदि उनके पुत्री हुई तो वे उस पुत्री को किसी देवता के अर्पित कर देंगे । ऐसी लड़कियां देवदासी कहलाती हैं । ये देवदासियां प्रकटतः तो मंदिरों में देवताओं के सामने नाचगान करती हैं , किन्तु उनका उपभोग मंदिर के पुजारी , गांव के सत्ता-संपन्न लोग तथा मंदिर में आने वाले विशिष्ट मेहमान करते हैं । कुछ मंदिरों व मठों में सधुआइनों को रखा जाता है । इन सधुआइनों का उपभोग भी मंदिर के पुजारी , महंत तथा सत्ताधारी लोग करते हैं । फणीश्वरनाथ रेणु कृत " मैला आंचल " की "लछमी" सधुआइन के पीछे महंत सेवादास , रामदास , लरसिंघ , नंगा बाबा आदि कई लोग पड़े हैं । स्वयं लछमी बालदेव पर आसक्त है ।[57] नागार्जुन कृत "इमरतिया" उपन्यास तो धार्मिक वेश्याओं का अच्छा उदाहरण है । इसमें माई इमरतीदास , लक्ष्मी , गौरी आदि सधुआइनें हैं । इन सधुआइनों का उपयोग आश्रम या मठ के हितों की रक्षा के लिए होता है । गौरी सधुआइन होते हुए साल में दो-तीन मर्द बदलती है , क्योंकि उसके ही शब्दों में वह गरमाये हुए घोड़े को भी शान्त करने की कुव्वत रखती है ।[58] लक्ष्मी को महन्त से ही गर्भ रह जाता है । लोगों में उसका रहस्य न खुल जाय इसलिए बाद में उसके बच्चे की बलि दी जाती है । कोई इस बात की शिकायत कर देता है और इस मामले की पुलिस इन्क्वायरी आती है , तब इन सबसे बचने के लिए गौरी को ही चार दिन के लिए पुलिस-थाना भेज दिया जाता है । उसका बड़ा ही व्यंग्यात्मक चित्र लेखक ने अंकित किया है —" भरतपुरा की पुलिस के रिकार्ड में दर्ज हुआ होगा — " पूजा की आठवीं रात में जाने किधर

से एक पगली आयी । उसकी गोद में छः महीने का बच्चा था । पुजारी की नजर बचाकर उसने बच्चे को हवन-कुण्ड में डाल दिया । सरकार बहादुर से अर्ज है कि वह धमनिया मठ के सन्त शिरोमणि बाबाजी महाराज की प्रतिष्ठा और इज्जत को ध्यान में रखें ।" 59 इसी उपन्यास में यह भी बताया गया है कि मठ में निःसंतान स्त्रियों को संतानवती बइ बनाने के लिए एक अलग से विभाग चलता है । यहां निपूती स्त्रियां आती हैं और कई-कई महीने रहकर चली जाती हैं । प्रकटतः तो वे पूजा-अर्चना वगैरह करती हैं । प्रतिदिन दो बार उनको बाबा की चमत्कारी छड़ी छुवाई जाती है, पर मठ के भीतर एक प्रकार का अनैतिक अड्डा ही चलता है । इन स्त्रियों के शारीरिक संबंध अलग-अलग लोगों से करवाये जाते हैं और फलतः उनमें से कइयों को गर्भ भी रह जाता है, तो उसका शुमार मठ के चमत्कारों में हो जाता है । इस संदर्भ में उपन्यास में दिया गया है —" मस्तराम की ड्यूटी तो बेंत की पिटाई के बाद खत्म हो जाती थी । अगला मोर्चा भगौती, लालता, रामजनम, सुखदेव जैसे फतहबहादुर संभालते थे । यही लोग ठूंठ की कोख से पौधा पैदा करने की विद्या जानते थे । पत्थर पर दूब जमाने की हिकमत इन्हीं लोगों को मालूम थी ❋ ।" 60 इस तरह धर्म के नाम पर इन मठों और आश्रमों में कई बार अनैतिक व्यभिचार — वेश्याचार चलता रहता है । शैलेश मटियानी के उपन्यास " एक मूठ सरसों ", "हौलदार", "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " तथा लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यास " प्रेम अपवित्र नदी " आदि में भी धर्म के नाम पर जो वेश्यावृत्ति चल रही है उनका उल्लेख मिलता है ।

वेश्यावृत्ति के दुष्प्रभाव ≬ Evil Effects of Prostitution ≬ :

वेश्यावृत्ति को किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जाता । यह एक सामाजिक और नैतिक बुराई है । वेश्या-जीवन पर "सलाम आखिरी" नामक उपन्यास लिखने वाली मधु कांकरिया ने जब एक बौद्धिक व्यक्ति से प्रश्न किया कि " क्या वेश्या-उन्मूलन संभव है ? " तो

उस बौद्धिक का उत्तर था — " हां, वह संभव है, पर वह उसी प्रकार का होगा जिस प्रकार कि " सोसायटी विदाउट ए गटर ।"[61] जवाब भावशून्य है । इससे इतना तो फलित होता है कि वह सभ्य समाज के लिए गटर के समान है । वेश्यावृत्ति के कई दुष्प्रभाव समाज पर देखे जाते हैं । यहां बहुत संक्षेप में उन पर विचार करने का उपक्रम है ।

/1/ नारी जाति का अपमान : वेश्यावृत्ति नारी जाति के लिए कलंक समान है । नारी की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका शील एवं सतीत्व है । वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्री अपने इसी सतीत्व का व्यापार करती है । कोई भी स्त्री अपने मन और आत्मा से इस व्यवसाय में नहीं आती है । उसको जबरन आना पड़ता है । नारी-गौरव और नारी-अस्मिता का उससे हनन होता है । महात्मा गांधी ने एक बार दुखी होकर कहा था कि "वेश्यावृत्ति मानव जाति के लिए कलंक है ।

/2/ व्यक्तित्व का विघटन : ऊपर कहा गया है कि कोई भी स्त्री अपने मन से वेश्या नहीं होना चाहती । जब कोई स्त्री वेश्या होती है तो सबसे पहले उसकी आत्मा का हनन हो जाता है । हर रात उनके देह का ही नहीं आत्मा का भी चीरहरण होता है । समाज में उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं होने के कारण वे अपनी ही नजर में गिर जाती है । फलतः वे हीन भावनाओं की शिकार हो जाती है । जवानी के ढल जाने पर उनको कोई नहीं पूछता । उन्हें कई तरह की बीमारियां होती हैं । नागा ने अपनी पुस्तक " ये कोठेवालियां " तथा आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास "गोली", जगदम्बाप्रसाद दीक्षित के उपन्यास "~~मुर्दाघर~~ " मुर्दाघर " तथा मधु कांकरिया के उपन्यास " सलाम आखिरी " में वेश्याओं के दर्दनाक किस्सों की यथार्थ चर्चा उपलब्ध होती है । कई वेश्याएं गम गलत करने के लिए शराब और नशीली वस्तुओं का सेवन भी करती हैं ।

/3/ पारिवारिक विघटन : वेश्यावृत्ति घर और परिवार के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है । जो स्त्री वेश्यावृत्ति करती है उसका अपने घर-परिवार में भी वह स्थान नहीं रह जाता जो पहले था । उसके अपने उसे हीन दृष्टि से देखने लगते हैं । " सलाम आखिरी" की गायत्री कोलकत्ता में किसी समीपवर्ती गांव से आती है । उसने अपनी सास से यह छिपाया है कि वह वेश्यावृत्ति करती है । उसकी सास तो यही जानती है कि वह शहर में कुछ बड़े लोगों के यहां काम करने जाती है । और पुरुष जब वेश्यागामी हो जाता है तो उससे उसका अपना नुकसान तो होता ही है किन्तु उससे उसके घर-परिवार पर भी बुरा असर पड़ता है । वह अपनी सम्पत्ति वेश्यावृत्ति में उड़ाने लगता है । बच्चों की दशा दयनीय हो जाती है । इस प्रकार वेश्यावृत्ति से परिवार में गुप्त रोगों के फैलने का खतरा भी रहता है । परिवार आर्थिक दृष्टया बर्बाद हो जाता है ।

/4/ सामाजिक विघटन : वेश्यावृत्ति के कारण समाज का भी विघटन होता है । उसके कारण सामाजिक मूल्यों का ह्रास होता है । समाज में नियंत्रण शिथिल हो जाता है । अपराधों में वृद्धि होती है । शहरों में उन क्षेत्रों में जहां वेश्यावृत्ति का धंधा चलता है, उच्च एवं अभिजात वर्ग के लोग नहीं रहते । ऐसे विस्तारों को लालबत्ती विस्तार [Red light Area] कहते हैं । कोलकाता में सोनागाछी, बहूबाजार आदि इस प्रकार के विस्तार हैं और इज्जत-दार लोग वहां जाने से भी कतराते हैं । अतः वहां रहने वाले लोगों को दूसरे लोग हीन दृष्टि से देखते हैं । "पतझड़ की आवाजें " [निरूपमा सेवती "] की नायिका अनुभा की सगाई इसलिए टूट जाती है कि दरिद्रता के कारण उसके मांबाप एक ऐसे मकान में रहने के लिए अभिशप्त हैं कि उसके ऊपरी हिस्से में वेश्याओं का कोठा है । "मुर्दाघर" का जब्बार नामक चोर एक बड़े घर पर हाथ इसीलिए साफ करता है और पुलिस की बेशुमार मार के बावजूद चोरी कबूल इसलिए नहीं करता कि वह अपनी बीबी को ऐसे विस्तार से बाहर निकालना चाहता है ।

/5/ नैतिक अधःपतन : वेश्यावृत्ति के कारण दोनों का नैतिक अधःx अधःपतन होता है — स्वयं वेश्या का और वेश्यागमन करने वाले व्यक्ति का । ये दोनों अपनी नजर में गिर जाते हैं । समाज में यौन-इच्छाओं की पूर्ति के लिए कई दूसरे सामाजिक मार्ग निकाले हैं । विवाह, परिवार आदि के कारण समाज के नैतिक मूल्यों की रक्षा होती है । किन्तु वेश्यावृत्ति इन नैतिक मूल्यों को चुनौती देता है । कई लोगों को जिन्हें वेश्यागमन की लत लग जाती है उनका वैवाहिक जीवन भी गड़बड़ा जाता है । स्त्री जाति के प्रति देखने का उनका नजरिया ही बदल जाता है । वे फिर उसे इज्जत की दृष्टि से नहीं देख पाते । वेश्यावृत्ति में लगे स्त्री-पुरुषों का विवेक समाप्त हो जाता है और वे उचित-अनुचित सभी प्रकार के कार्य करने लगते हैं ।

/6/ अपराधों में वृद्धि : कई बार देखा गया है कि एक सामाजिक बुराई दूसरी कई बुराइयों को निमंत्रण देती है । वेश्यावृत्ति के साथ शराबखोरी, जुआ, चोरी, डकैती, अपहरण और हत्या आदि अपराध जुड़े हुए होते हैं । "मुर्दाघर" में जहां वेश्याएं रहती हैं वहां जुआ, शराब आदि सभी चलता है । मुंबई जैसे महानगरों में पाकेटमार, जेबकतरे, उठाइगिर आदि लोग गन्दी बस्तियों में ही रहते हैं । कई डाकू और अपराधी वेश्याओं के यहां शरण पाते हैं । इसीलिए कई बार लोगों की हत्या तक हो जाती है । "सलाम आखिरी" में एक किस्सा वर्णित है । चम्पा नामक वेश्या पहले जिस चकले में काम करती थी वहां पर किसीकी हत्या हो जाने से वह चकला बन्द हो गया था । अतः अब वह मीना के चकले में काम करती है ।[62] "नदी फिर बह चली" [हिमांशु श्रीवास्तव] उपन्यास की नायिका परबतिया का पति खराब सोहबत में पड़कर वेश्याओं के यहां जाने लगता है । एक दिन वेश्या की कोठरी के आगे शराब के नशे में धुत होकर अपने साथी के पेट में छूरा भोंक देता है ।[63] और इसीलिए उसे जेल हो जाती है । बिमल मित्र कृत "साहिब बीबी गुलाम" में नायक कोठों पर जाता है और उसी में आपसी रंजिश के कारण एक वेश्या के लिए उसके विरोधी

उस पर जानलेवा हमला करते हैं । उसके बाद नायक को जो लकवा मार जाता है, वह आजीवन पंगु अवस्था में ही रहता है । इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वेश्यावृत्ति के साथ-साथ अपराधों की संख्या में भी वृद्धि होती है ।

/7/ आर्थिक हानि : कई बार लोग वेश्याओं के पीछे इतने दीवाने हो जाते हैं कि वे पूरी तरह से बरबाद और तबाह हो जाते हैं । ऊपर जिस उपन्यास की बात की गई है उसमें समूचा खानदान वेश्याओं के कोठों के कारण बरबाद हो जाता है और उसके कारण जब उनकी आर्थिक स्थिति गिरने लगती हैं, तब वे ही कोठेवालियां दूसरों को पकड़ती हैं, इतना ही नहीं इन्हें जलिल भी करती है । "सलाम आखिरी" में एक अवांतर कथा दी गई है — एक वणिक-पुत्र की कथा । एक वणिक पुत्र वेश्या के प्रेम में दीवाना होकर अपना व्यापार-धंधा वगैरह सबकुछ डुबो देता है । तब उसके पिता उसे एक अच्छी खासी रकम देकर दूसरे शहर भेजते हैं । वणिक-पुत्र को घोड़े पर बैठकर विदेश जाते देख धाड़ें मारकर वह रोने लगती है । जब किसी तरह वह रुकता नहीं है तो वह वेश्या एक कुएं में छलांग लगा देती है । वणिक-पुत्र वेश्या के प्रेम पर आफ्रीन हो जाता है और वहीं रुक जाता है । साल-सवा साल तक प्रेम की झिलमिल उसे बांधे रहती है और उसे लगता है कि वह सुख के हिमालय पर आसीन है । पर देखते ही देखते जब उसके पास की सारी संचित पूंजी उड़ गई तो दोनों मां-बेटियों ने उसे धक्के मारकर बाहर किया । {तब} सबकुछ गंवाकर उस वणिक-पुत्र ने अंतिम बार उस कुटनी से पूछा — " तो फिर उस दिन तुमने कुएं में छलांग क्यों लगाई थी, वह कुआं तो तुम्हारे प्यार की तरह नकली नहीं था, तुम्हारी जान भी जा सकती थी । " तब वे मां-बेटी कहती है — " अरे वह तो हमारा नाटक था, कुएं में पहले से ही जाल बिछाया हुआ था । "[64] वेश्याओं के बारे में जितनी भी कथाएं, लोकोक्तियां प्रचलित हैं वे सब उसके इस कुटनी रूप को उजागर करती हैं । " रंडी किसकी जोरू, भड़वा किसका साला ? "

ऋषभचरण जैन कृत उपन्यास " तीन इक्के " का नायक मुरारीलाल दिल्ली के प्रसिद्ध सेठ रायबहादुर श्यामलाल का इकलौता पुत्र है, लेकिन जुए और रण्डीबाजी की लत में वह बरबाद हो जाता है। उपन्यास के अंत में हम देखते हैं कि मुरारीलाल अपनी दीन-हीन पत्नी जमना और बच्चों के साथ दिल्ली की एक गली में छः रूपये महीने के किराये पर रह रहे हैं। [65] इस प्रकार वेश्यागामी लोग अपनी स्त्री एवं बच्चों का पालन-पोषण भी नहीं कर सकते। स्वयं वेश्या को जो धन मिलता है वह उसके दलालों, मालिकों-मालकिनों, उस्तादों और भड़ुओं में बे बंट जाता है। बहुत कम वेश्याएं समृद्ध होकर स्वयं चकले की मालकिनें होती हैं। अधिकांश वेश्याओं के आर्थिक-जीवन में सिवाय अंधकार के और कुछ नहीं होता।

/8/ <u>यौन रोग</u> : इन्हें गुप्त रोग भी कहते हैं। मेडिकल परिभाषा में इन यौन-रोगों की गणना "वी.डी. " में होती है। वेश्यावृत्ति के कारण स्त्री एवं पुरुष दोनों को अनेक प्रकार के यौन-रोग हो सकते हैं जैसे प्रमेह, गोनेरिया, उपदंश (सिफिलिस) आदि। आजकल इनमें एक नये असाध्य रोग की वृद्धि हुई है, जिसे कहते हैं— एड्ज, और जिसके नाम से लोग थर-थर कांपने लगते हैं। वैसे तो एड्ज होने के कई कारण हैं, परन्तु एक प्रमुख कारण माना जाता है— वेश्यागमन। जो व्यक्ति एच.आई.वी. पोजिटिव होता है, उसे आगे चलकर एड्ज हो सकता है। यदि कोई वेश्या एच.आई.वी. पोजिटिव है, तो उसके साथ जो भी संभोग करेगा वह एच.आई.वी. पोजिटिव होगा। उसी तरह एच.आई.वी. पोजिटिव पुरुष किसी वेश्या को एच.आई.वी. पोजिटिव बना सकता है। इस प्रकार यह रोग बड़ा ही संक्रामक है। उनके बच्चों को भी यह रोग हो सकता है। इसलिए सरकार ने "एड्ज-विरोधी" अभियान शुरू किया है और घर-घर जाकर लोगों को "निरोध" दिए जाते हैं। लालबत्ती एरिया में निरोध मिलते हैं। इसके अलावा प्रत्येक वेश्या भी आजकल सुरक्षित सहवास के लिए "निरोध" अपने पास रखती है, फिर भी कुछ खब्त खोपड़ी के

ग्राहक होते हैं जो इसका प्रयोग करने के लिए मना कर देते हैं, क्योंकि इससे उनके आनंद में खलल पड़ता है । [66] उपर्युक्त रोगों के अलावा डिसूरिया, ग्लोट एवं अतिस्राव जैसे ~~xxxx~~ संक्रामक रोग भी फैलते हैं । भारत में 50 प्रतिशत महिलाएं ये रोग अपने पतियों से प्राप्त करती हैं । कई बच्चे इन रोगों को माँ-बाप से विरासत के रूप में पाते हैं । इन रोगों के कारण अंधी, लूली, लंगड़ी, बहरी एवं विकलांग संतानें भी पैदा हो सकती हैं । चिकित्सकों का मत है कि यौन-रोगों से पीड़ित व्यक्तियों की 80 प्रतिशत संतानें जन्म से ही अंधी व विकलांग होती हैं । [67] "सलाम आखिरी" उपन्यास में तुलसी नामक एक तेरह साल की नेपाली वेश्या का उल्लेख मिलता है । इसे मुंबई के जे.जे. अस्पताल में तीन-तीन गुप्त रोगों की शिकार पाई गई । महज तेरह वर्ष की अवस्था में ही उसका शरीर घिनौना हो चुका था । उसे नेपाल से भगायी जाकर यहां के चकले में बेच दी गई थी । इस मसले को इण्टरनेशनल हेल्थ आर्गेनाइजेशन ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी उठाया था कि नेपाल और बांगला देश की लड़कियां भारत में और भारत की लड़कियां ईस्ट तथा यूरोप में बेची जा रही थीं । [68]

भारत में वेश्यावृत्ति :

वेश्यावृत्ति एक व्यवसाय के रूप में भारत में अति प्राचीन काल से प्रचलित रहा है । भारतीय पुराणों व धर्मग्रन्थों में उर्वशी, रम्भा, मेनका आदि अप्सराओं का उल्लेख मिलता है । इनको हम स्वर्ग की या इन्द्रलोक की वारांगनाएं कह सकते हैं । वे बहुत सुंदर तथा नृत्य-गायन इत्यादि कलाओं में दक्ष हुआ करती थीं और इन्द्र के दरबार में देवताओं का मनोरंजन करती थीं । कई बार उन्हें ऋषियों की परीक्षा लेने या उनकी तपस्या भंग करने के लिए भेजी जाती थीं । यह तो भलीभांति विदित है कि विश्वामित्र का तप भंग करने के लिए मेनका नामक अप्सरा को भेजा गया था । मेनका और विश्वामित्र की संतान ही शकुन्तला है । एक मान्यता के अनुसार इसी शकुन्तला के पुत्र भरत के नामसे हमारा देश "भारत" के रूप में जाना जाता है । [69]

इसी तरह प्राचीन कथाओं में " विष-कन्याओं " का उल्लेख भी मिलता है । शैशवकाल से ही सुंदर लड़की को हल्का-हल्का जहर दिया जाता है, इस प्रकार विषकन्या को निर्मित किया जाता था । ये विषकन्याएं अत्यधिक रूपवती होती थीं, तथा एक राजा अपने शत्रु राजा को परास्त करने के लिए कई बार विषकन्या का प्रयोग करता था । विष-कन्या के रूप व यौवन पर मुग्ध होकर राजा जब उसके साथ समागम करता था, तो उसकी मृत्यु हो जाती थी । उत्तर वैदिक काल में वेश्यावृत्ति एक संस्थात्मक रूप ले चुकी थी । राजाओं और संपन्न लोगों के यहां विवाह, त्यौहार एवं उत्सवों के समय वेश्याएं नृत्य व गायन द्वारा उनका मनोरंजन करती थीं । रामायण एवं महाभारत काल में भी वेश्याओं का उल्लेख मिलता है । अपने महामूल्यवान ग्रन्थ अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने राजदरबारों में नाच-गान करने वाली गणिकाओं का उल्लेख किया है । जातक कथाओं में भी एक ऐसी सुंदरी का उल्लेख मिलता है जो एक रात्रि के लिए एक हजार सोनामुहर की मांग करती है । मनु, गौतम, बृहस्पति आदि सभी स्मृतिकारों ने वेश्यावृत्ति को रोकने के उपायों को निर्दिष्ट किया है, इससे प्रमाणित होता है कि उस समय में वेश्याओं का अस्तित्व था । वात्स्यायन के कामसूत्र में तीन प्रकार की वेश्याओं का उल्लेख मिलता है — 1. गणिकाएं — जो 64 कलाओं में दक्ष होती थीं तथा जिन्हें राज-दरबारों में भी सम्मान मिलता था । 2. रूपजीविनियां — उनके अंग अत्यन्त सुंदर होते थे, फलतः वे देखनेवालों में यौन-इच्छा को जागृत करती थीं । 3. सामान्य वेश्या — जो अपने रूप एवं शरीर को बेचने के लिए सदैव तत्पर रहती थीं । भारत में देव-दासी प्रथा का प्रचलन भी प्राचीन काल से है, जिसमें लड़कियों को देवताओं के मंदिर में सेवा के लिए भेंट के रूप में दिया जाता था । मुगल काल में वेश्यावृत्ति खूब पनपी थी और कई नवाब अपने हरम में हजारों स्त्रियां रखते थे । अतः उन सबसे पतिव्रता और सती होने की आशा रखना व्यर्थ है । अपनी यौन-तृप्ति के लिए वे कई-कई पुरुषों से संबंध रखती थीं । किन्तु मुगल साम्राज्य के पतन के उपरान्त उसमें ओट आयी । आज भी कई वेश्याएं जैसे बेरिया, नट, ब्रजवासी, पतारिया,

राजधारी तथा डेरेदार अपने को मुगल दरबारियों की पत्नियां एवं संतानें बताते हैं ।[70]

अंग्रेजों के समय में भारत में औद्योगीकरण की नींव रखी गयी और नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र से तीव्रतर होती गयी । इसके कारण इस समस्या ने एक नया रूप धारण किया । अंग्रेजों के समय में कई जमींदार , तालुक्केदार तथा नवाब अपनी व्यक्तिगत वेश्याएं रखते थे । आजादी के बाद जमींदार प्रथा के उन्मूलन के साथ कई वेश्याएं बेसहारा हो गयीं । परन्तु एक बात जो हम देख सकते हैं वह यह कि क्रमशः इस व्यवसाय से कला , संगीत , ~~xxxx~~ नृत्य इत्यादि का छेद उड़ता गया है और अब यह केवल जिस्मफरोशी होकर रह गया है । छबिली (बाजीराव पेशवा) , प्रवीणराय (ओरछा नरेश) , उमरावजान जैसी वारांगनाएं अब कहां ?

किन्तु औद्योगीकरण , नगरीकरण , स्लमीकरण आदि के कारण अब वेश्यावृत्ति के प्रमुखतया दो रूप मिलते हैं -- 1. एकदम सस्ती वेश्याएं जो सामान्य लोगों के लिए हैं , और 2. हाय-फाय वेश्याएं जो बड़े लोगों के लिए हैं जिनमें बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ , उद्योगपति, नवधनिकवर्ग के लोग तथा बड़े-बड़े नौकरशाह आते हैं । नगरों तथा महानगरों की पंचतारक होटलों में ऐसी हाय-फाय वेश्याओं को बुलाया जाता है , जिन्हें आजकल की भाषा में "काल-गर्ल" कहा जाता है । बड़े-बड़े शहरों में चलने वाले होटलों , क्लबों , नाचघरों , कैबरे-स्थलों में यह वेश्यावृत्ति पायी जाती है । माडर्न सोसायटी की कुछ लड़कियां और स्त्रियां कैरियर-गर्ल्स के रूप में वेश्यावृत्ति को अपना रही हैं जिसमें कई उच्च और सम्मानित घरों की शिक्षित लड़कियां व स्त्रियां भी होती हैं और जिनका उल्लेख हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में कर चुके हैं । हाई सोसायटी की कुछ लड़कियां और स्त्रियां अपने हाई स्टाण्डर्ड और स्टेटस को बरकरार रखने तथा कम समय में अधिक धन कमाने और साथ ही साथ अपनी यौन-इच्छा की पूर्ति के लिए यह काम करती हैं । निम्न कक्षा की वेश्याएं अब अपने को "सेक्स-वर्कर " कहती हैं ।

मुंबई की वेश्याओं पर किया गया एक अध्ययन :

सन् 1962 में टाटा स्कूल आफ सोशल साइन्सेज द्वारा मुंबई की 350 वेश्याओं का एक अध्ययन डा. पुनेकर की अध्यक्षता में हुआ था , ~~इसके~~ उसके कुछ निष्कर्ष यहां प्रस्तुत है —

/1/ 32.29 प्रतिशत वेश्याएं देवदासियां थीं ।

/2/ लगभग आधी वेश्याएं मैसूर की थीं , शेष मुंबई व भारत के अन्य भागों की ।

/3/ देवदासियों के अतिरिक्त वेश्याओं में 79.43 प्रतिशत वेश्याएं हिन्दू , 11.81 % मुसलमान , 6.75 % ईसाई , 2.11 % अन्य धर्मावलम्बी थीं । हिन्दुओं में भी 45.51 % वेश्याएं महार , मंग आदि दलित जातियों की थीं ।

/4/ गैर-देवदासी वेश्याओं में से 40.93 % अविवाहित , 28.27 % विधवा , 17.30 % घर से भगायी हुई स्त्रियां , 7.17 % परित्यक्ता , 5.91 % पति से अलग हुई तथा 0.42 % विवाहित थीं ।

/5/ गैर-देवदासी वेश्याओं से दो-तिहाई ने अपना घर धोखे में आकर , भगा ले जाने व जोर-जबरदस्ती के कारण छोड़ा ।

/6/ प्रतिवेदन में वेश्यावृत्ति के 26 कारण दिये गये हैं , जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :— माता-पिता , पति वा संरक्षक की मृत्यु अथवा इनका दुर्व्यवहार ; निर्धनता , दुखी वैवाहिक जीवन , पति द्वारा विश्वासघात , तलाक , भगा ले जाना , ~~बंशक्रम~~ वंशानुगत रूप से , यौन-इच्छा , अवैध गर्भ ठहरना , जबरन यौन-संबंध , अज्ञानता , बदले की भावना , पर्यावरण का प्रभाव आदि ।

/7/ वे प्रति व्यक्ति एक रूपये से पांच रूपये तक वसूल करती हैं । {ध्यान रहे यह सन् 1962 की बात है । उस समय कई लोगों की मासिक तनख्वाह 80-90 रूपये हुआ करती थी । }

/8/ अपनी आय का 50 % हिस्सा वे दलालों को देती हैं ।

/9/ 28.65 % वेश्याओं ने 11 से 15 वर्ष की आयु में तथा शेष ने 16 से 20 वर्ष की आयु में अपना घर छोड़ दिया था ।

/10/ अविवाहित वेश्याओं में से 62.86 % इस व्यवसाय को पसंद करती थीं । 11.90 % उदासीन तथा 21.43 % पसंद नहीं करती थीं । शेष ने कोई उत्तर नहीं दिया । विवाहित वेश्याओं में से 44.29 % ने इस व्यवसाय को पसंद किया, 13.57 % ने उदासीनता दिखाई तथा 35.71 % ने पसंद नहीं किया तथा शेष ने कोई जवाब नहीं दिया ।

/11/ 68.85 % वेश्याएं कभी भी अपने ग्राहकों का मनोरंजन करने को तैयार थीं, जबकि 30.86 % केवल शाम को ही ।

/12/ कई वेश्याओं की आय 100 रूपयों महीने से अधिक नहीं थी । {यहां पुनः रूपये की तब की कीमत पर ध्यान देना होगा । }

/13/ 36 % वेश्याएं गुप्त रोगों से पीड़ित थीं ।

/14/ 50 % वेश्याएं अपने परिवार से सम्बन्ध बनाए हुए थीं एवं समय-समय पर अपने निवास पर जाती थीं । 10 % वेश्याओं ने इस व्यवसाय को छोड़कर दूसरा सम्मानजनक व्यवसाय करने की इच्छा प्रकट की ।[71]

आल इण्डिया मोरल एण्ड सोशल हाइजीन एसोसियेशन का सर्वेक्षण :

उक्त संस्था ने सन् 1949-50 में वेश्यावृत्ति के संदर्भ में भारत के लगभग सभी राज्यों से कुछ सूचनाएं उपलब्ध की थीं । लगभग 10 राज्यों से जो सूचनाएं मिलीं उनके आधार पर जो निष्कर्ष निकलते हैं, उनको यहां बहुत संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है —

/1/ 10 राज्यों में कुल 3219 वेश्यालय थे जिनमें लगभग 13530 वेश्याएं थीं ।

/2/ इस व्यवसाय में उनके आने की औसत आयु 10 से 29 वर्ष थी ।

/3/ 66.5 % वेश्याएं गांवों से आयी थीं तथा शेष शहरों से ।

/4/ गरीबी , बेकारी , ~~तनाव~~ पारिवारिक तनाव आदि इसके मुख्य कारण थे । 55.4 % स्त्रियों ने आर्थिक कारणों से , 27.7 % ने घरेलू कारणों तथा 16.9 % ने धार्मिक व सामाजिक कारणों से वेश्यावृत्ति को अपनाया था ।

/5/ वेश्यावृत्ति में लगे हुए सभी प्रकार के लोगों जैसे वेश्या , दलाल , मालिक आदि की संख्या दो लाख से भी अधिक थी । [72]

~~/6/ सन् 1950 में बम्बई में 12000 वेश्याएं थीं और 1975 में~~

इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान टाईम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 1950 में बम्बई में 12000 वेश्याएं थीं , जो सन् 1975 तक बढ़ते-बढ़ते 75000 तक होने का अनुमान है । [73] सन् 1970 की भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार अनैतिक व्यापार में लगे हुए 90 प्रतिशत अपराध आन्ध्र , मैसूर एवं तमिलनाडु में हुए । बड़े नगरों में 46.4 प्रतिशत हैदराबाद में एवं 27.5 प्रतिशत बैंगलोर में अनैतिक व्यापार सम्बन्धी अपराध रिकार्ड किए गए । [74]

यहां एक तथ्य की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा कि जो स्त्रियां प्रकट रूप से वेश्यावृत्ति करती हैं उनके आंकड़े एवं अध्ययन तो संभव है , लेकिन अप्रकट रूप में यह कार्य करने वालों के बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है । अप्रकट रूप में हजारों स्त्रियां अपने आर्थिक संकट के कारण या अपने मौज-शौक को पूरा करने के लिए इसमें लगी हुई हैं , इनके आंकड़ों को एकत्रित करना असंभव कार्य है । कई महिलाएं प्रकटतः तो नौकरी करती हैं , परन्तु उसके साथ ही साथ विलासी जीवन जीने के लिए वे देह को माध्यम बनाती हैं । इनको क्या कहा जाए ? वेश्या की जो परिभाषा है उसके अनुसार तो ऐसी महिलाओं को भी ~~वेश~~ वेश्या की कक्षा में ही रखना चाहिए । "पतझड़ की आवाजें " (निरूपमा सेवती) की उषा को हम यहां उदाहरण के रूप में ले सकते हैं । कामचोर और अकार्यकुशल होने के बावजूद जो प्रमोशन अनुभा को मिलना चाहिए था उसे उषा हड़प लेती है , क्योंकि

जिस पुरुष से अपनी कोई स्वार्थ-सिद्धि होती हो , उससे किसी भी सीमा तक अंतरंग होने में उसे कोई अनौचित्य नहीं दिखता । अपने बोस के साथ होटल या पिकनिक पर जाने में उसे कोई एतराज नहीं है । उसका तो स्पष्ट मत है —" इस मर्द जात के साथ तभी सोओ , अगर माल हासिल होता हो ।" 75 अल्प वेतन होते हुए भी वह बड़ी-बड़ी पार्टियां देती है और मेहमानों को महंगी विदेशी आयातित शराब पिलाती है । इसके जरिये वह बड़े-बड़े लोगों को फांसती है । उसका बोस सी.के. के साथ तो उसके शारीरिक संबंध हैं ही , फिर भी एक अन्य पुरुष के साथ वह विवाह इसलिए कर लेती है कि विवाह का सर्टिफिकेट बड़ी काम की चीज है । अपने बोस के व्यावसायिक फायदे के लिए वह कभी-कभार किसी दूसरे बड़े आदमी या आफिसर का बिस्तर भी गरम करती है । "चिड़ियाघर" ‖ गिरिराज किशोर ‖ की मिसेज रिजवी भी इसी प्रकार की महिला है ।

वेश्याओं के प्रकार :

यद्यपि परवर्ती चतुर्थ अध्याय में वेश्याओं के प्रकार व कोटियों पर सोदाहरण विस्तृत चर्चा की गयी है , तथापि यहां बहुत संक्षेप में वेश्याओं के नाना प्रकारों पर प्रकाश डालने की चेष्टा इसलिए की जा रही है ताकि हिन्दी उपन्यासों में जो वेश्या-जीवन का चित्रण उपलब्ध ~~हरेला×ह×~~ हुआ है उसका यथेष्ट ढंग से विश्लेषण हो सके ।

निम्नलिखित तीन आधारों पर हम वेश्याओं को वर्गीकृत कर ~~सके×~~ सकते हैं — ‖अ‖ वात्स्यायन कामसूत्र का आधार , ‖ब‖ समाजशास्त्रीय आधार , ‖क‖ आर्थिक आधार ।

‖अ‖ वात्स्यायन कामसूत्र का आधार :

वात्स्यायन कामसूत्र में पूरा छठा ~~अध्यxx~~ प्रकरण वेश्याओं के संदर्भ में दिया है । कामसूत्र के अनुसार वेश्याएं तीन प्रकार की होती हैं — गणिका , रूपजीवा और सामान्या । गणिका 64 कलाओं में

निपुण होती है और उसका राज-दरबारों में भी सम्मान होता है । पूर्ववर्ती अध्याय में उसके संदर्भ में विस्तार से दिया गया है । [76] रूप-जीवा उसे कहते हैं जो सुंदर व सुगठित देहयष्टि (Figure) के कारण देखने वालों में ~~अभिलेच्छा~~ यौनेच्छा जाग्रत करती है । सामान्या उसे कहते हैं जो अपने रूप व शरीर को बेचने के लिए सदैव तत्पर रहती है । इसके अतिरिक्त वात्स्यायन ने छठे "वैशिक अधिकरण" के अन्तर्गत द्वितीय अध्याय में "एकचारिणी वेश्या" का उल्लेख किया है । ऐसी वेश्या वेश्या होते हुए भी किसी एक में विशेष अनुरक्त होती है । उसका कोई विशेष प्रेमी भी होता है । एकचारिणी वेश्या के संदर्भ में यहां दिया गया है —

1. " व्यवाये तदुपचारेषु विस्मयः । " — संभोग काल में जब नायक पान आदि जो भी वस्तु वेश्या को दे तो उसे खाकर वह आश्चर्य प्रकट करती हुई कहे कि इससे पहले ऐसी स्वादिष्ट वस्तु कभी नहीं खाई थी ।

2. " चतुः षष्टयां शिष्यत्वम् । " — संभोग के समय काम-कलाओं से अनभिज्ञ बनकर नायक से कहे कि जैसा आप कहें वैसा मैं करूं, मैं तो कुछ जानती नहीं ।

3. " मनोरथानामाख्यानम् । " — एकान्त में उससे यह भी कहे कि मेरी इच्छा है कि रातभर हास-विलास सहित सम्भोग होता रहे ।

4. "प्रेक्षणमन्यमनस्कस्य । राजमार्गे च प्रासादस्थायास्तत्र विदिताया व्रीडा शाठ्यनाशः । " — जाते हुए नायक को टकटकी लगाकर देखे, दूर तक सड़क पर निकल जाने पर झरोखे से उद्विग्न होकर देखे और यदि नायक की नजर पड़ जाए तो शरमाकर नजरों को झुका ले । यदि नहीं शरमाती है तो बनावटी प्रेम प्रकट हो जाएगा ।

5. " स्वकृतेष्वपि नखदशनचिह्नेष्वन्याशंका । " — नायक के अंगों पर खुद अपने दांतों और नाखूनों से काटकर निशान बना दें और दूसरे दिन किसी और के निशान होने की शंका करें ।

6. "मदस्वप्नव्याधिषु तु निर्वचनम् । " — नायक के आने पर सोने का या बेहोशी का बहाना ~~करे~~ करके यह प्रकट करे कि तुम्हारे न

मिलने से यह हालत हुई है ।

7. "गुणतः परस्याकीर्तनम् । " — नायक के सामने किसी दूसरे के गुणों की प्रशंसा न करे ।

8. " तेनसह देशमोक्षं रोचयेद्राजनि निष्क्रयं च । " — मुझे लेकर दूसरे प्रदेश चलो , राज्य शासन को हरजाना देकर मुझे रख लो या चुपचाप भगा ले चलो — ऐसा नायक से कहना चाहिए ।

9. "तस्मात्पुत्रार्थिनी स्यात् । आयुषो नाधिक्यमिच्छेत् । " — अपने प्रेमी से पुत्र-लाभ की कामना करे और उससे पहले ही मर जाने की इच्छा व्यक्त करे ।

10. "निर्माल्यधारणे श्लाघा उच्छिष्टभोजने च । " — उसकी उतरी हुई वस्तु को धारण करे और उसका जूठा खाने में अपना गौरव समझे ।[77]

ये सारी बातें एकचारिणी वेश्या के संदर्भ में बताई गयी हैं । इसी प्रकरण में पृ. 697 पर वेश्याओं के दश भेद बताए हैं — कुम्भदासी , परिचारिका , कुलटा , स्वैरिणी , नटी , शिल्पकारिका , प्रकाशविनष्टा , रूपाजीवा और गणिका । कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने अपनी जय-मंगला टीका में इनके लक्षण बताते हुए लिखा है कि निकृष्ठ कर्म करने वाली स्त्री कुम्भदासी , जो अपने स्वामी की सेवा करती है ऐसी दासी परि-चारिका वेश्या , जो पति के भय से दूसरों के घरों में जाकर व्यभिचार करती है वह कुलटा , अपने पति का अनादर करके जो अपने घर पर ही या अन्यत्र व्यभिचार रत होती है वह स्वैरिणी वेश्या , रंगमंच पर नाचने वाली नटी , धोबी और दर्जी की स्त्री शिल्पकारिका , जो पति के जीवित रहते अथवा मर जाने पर किसी दूसरे के घर जा बैठती है वह प्रकाशविनष्टा । परिचारिका वेश्या से लेकर प्रकाशविनष्टा तक की स्त्रियां रूपाजीवा वेश्या कही जाती हैं । [78]

(ब) समाजशास्त्रीय आधार पर वेश्याओं के प्रकार : समाजशास्त्रीय आधार पर वेश्याओं के निम्न-लिखित प्रकार सामने आते हैं — /1/ प्रकट समूह , /2/ अप्रकट समूह ,

/3/ काल गर्ल्स , /4/ होटल वेश्याएं , /5/ रखैल वेश्याएं {Concubines} /6/ वंशानुगत वेश्याएं , /7/ वासना-पीड़ित वेश्याएं , /8/ परिस्थिति-जन्य वेश्याएं , /9/ अपराधी एवं पिछड़ी जातियों व जनजातियों की वेश्याएं , ~~x9xx~~ /10/ धार्मिक वेश्याएं , /11/ पुरुष-वेश्याएं {male-Prostitute} , /12/ बार-गर्ल्स वेश्याएं , /13/ मसाज वेश्याएं , /14/ प्रच्छन्न वेश्याएं , /15/ गौनहारिन वेश्याएं आदि-आदि । अब बहुत संक्षेप में इन पर विचार किया जाएगा ।

/1/ प्रकट समूह : इनमें वे वेश्याएं आती हैं जो रजिस्टर्ड होती हैं या जो स्पष्ट रूप से वेश्यालय चलाती हैं । बड़े शहरों में ऐसे क्षेत्र को जहां वेश्याएं रहती हैं, "लालबत्ती विस्तार " {Read light Area} कहते हैं । मुंबई में उत्तर में फाकलेण्ड रोड , दक्षिण में गोलपीठा , पूरब में कमाठीपुरा और पश्चिम में त्रिभुवन रोड आदि विस्तार लालबत्ती विस्तार के रूप में जाने जाते हैं । [79] कोलकाता में सोनागाछी , बहु-बाजार , काली घाट , बैरकपुर , खिदिरपुर आदि क्षेत्रों में ये लालबत्ती विस्तार हैं । [80] दिल्ली में जी.टी. रोड तथा पहाड़गंज आदि विस्तार हैं । आग्रा में किनारीबाजार इसके लिए कुख्यात है । इनमें वेश्याओं के कोठे बने हुए होते हैं । जिन्हें "चकला" भी कहा जाता है । इन कोठों पर युवा, वृद्ध , स्वस्थ , अस्वस्थ , गरीब , अमीर सभी लोग यौन-संतुष्टि के लिए जाते हैं ।

/2/ अप्रकट समूह : अप्रकट समूह में उन वेश्याओं को लिया जाता है जो चोरी-छिपे वेश्यावृत्ति करती हैं । ऐसी स्त्रियां वेश्यावृत्ति के साथ-साथ अन्य व्यवसाय भी करती हैं , क्योंकि केवल एक ही व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आमदनी से इनका गुजारा नहीं होता है । नेशनल हाई वे पर ढाबों और विश्रामस्थलों के आसपास की झोंपड़पट्टियों में भी कुछ स्त्रियां इस प्रकार का व्यवसाय करती हैं । वे मेहनत-मजदूरी के साथ-साथ वेश्यावृत्ति भी करती हैं । समुद्री बीचों के आसपास भी कई बार इस प्रकार की वेश्याएं पायी जाती हैं ।

/3/ काल गर्ल्स : इस प्रकार की वेश्याएं शराबघरों, होटलों, कैबरे स्थलों, नाचघरों तथा क्लबों में जाकर धन्धा करती हैं। उन्हें पहचानना सरल नहीं होता है। बड़े-बड़े शहरों में कुछ उच्च घरों की लड़कियां एवं स्त्रियां भी इस प्रकार के कार्य करती हैं। होटलों के मालिक, टेक्सी-ड्रायवर, ओटो-रिक्शा ड्रायवर, कैबरे नृत्य के संयोजक तथा अन्य दलाल अपना कमीशन लेकर इस कार्य में सहयोग देते हैं। उनके पास उनके फोन-नंबर होते हैं, अतः उन नंबरों पर काल करके उनको बुला लिया जाता है। इसी कारण उनको "काल-गर्ल्स" कहा जाता है। मोबाइल वगैरह के चलते अब यह काम और भी आसान हो गया है।

/4/ होटेल-वेश्याएं : कई लड़कियां व स्त्रियां होटलों में जाकर वेश्या-वृत्ति करती हैं। आजकल कई होटलों के मालिक इस व्यवसाय में लगे हुए हैं। इनमें जो वेश्याएं आती हैं वे शिक्षित, फैशनेबल और आराम-दायक होती हैं। इनमें कालेज की लड़कियां, स्टेनो, टेलिफोन आपरे-टर, सोसायटी गर्ल्स तथा हाई सोसायटी की महिलाएं आदि होती हैं। इनकी आमदनी का एक अच्छा-खासा हिस्सा होटल-मालिक को जाता है। होटेल-वेश्याएं छिपे रूप में अपना व्यवसाय करती हैं। इस संदर्भ में कुसुम मित्तल ने लिखा है — "ये महिलाएं पढ़ी-लिखी व संपन्न परिवारों से सम्बन्ध रखती हैं। इस वर्ष (2004) अकेले दिल्ली में 295 महिलाओं को पुलिस द्वारा पकड़ा गया है जो इस धंधे में कार्यरत थीं। इनमें से 70 प्रतिशत महिलाएं संपन्न परिवारों से सम्बन्ध रखती थीं। यह महिलाएं पांच सितारा होटलों तथा सरकारी गेस्ट हाउसों से अपना व्यवसाय चलाती हैं।"[8] होटलों की श्रेणी से इन वेश्याओं की श्रेणी भी निर्धारित होती है।

/5/ रखैल वेश्याएं (Concubines) : "रखैल" शब्द संस्कृत के "रक्षिता" से व्युत्पन्न हुआ है। कई विवाहित पुरुष पत्नी के अतिरिक्त भी किसी स्त्री से अवैध यौन-संबंध रखते हैं। उस स्त्री के भरण-पोषण की जिम्मेदारी उस पुरुष की होती है। जब तक वह उसे त्याग न दे वह स्त्री किसी अन्य पुरुष से संबंध नहीं रख सकती है।

बड़े-बड़े सेठ , उच्च अधिकारी , राजनीतिज्ञ , स्मगलर , डकैत , डोन वगैरह अपनी-अपनी "रखैल" रखते हैं । कुछ लोग तो इसीमें अपनी शान समझते हैं । हंसी-मजाक या व्यंग्य में आजकल उसके लिए " स्पेर-व्हील" शब्द भी चल पड़ा है । कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जो प्रत्येक शहर में एक-एक "रखैल" रखते हैं । "अमरमणि-मधुमिता " कांड की मधुमिता राजनीतिज्ञ अमरमणि की "रक्षिता" ही थी । कुछ महिलाएं नौकरियों में उच्च पोजिशन हासिल करने के लिए , प्रमोशन के लिए , राजनीति में ऊपर आने के लिए "शार्ट-कट" के रूप में किसी "बड़ी तोप" की "रखैल" बन जाती हैं और कई बार तो उसमें गौरव का भी अनुभव करती हैं । कई लोग इस प्रकार की "मेमसाबों" से अपने कई-कई प्रकार के कार्य करवाते हैं ।

/6/ <u>वंशानुगत वेश्याएं :</u>

कई वेश्याएं वंशानुगत होती हैं । वंशानुगत वेश्याएं वस्तुतः मुगलकाल की देन हैं । इस प्रकार की वेश्याएं अपने बाद अपना व्यवसाय पुत्री में हस्तांतरित करती हैं । अतः इनके यहां पुत्री का जन्म आनंदोत्सव का सबब बन जाता है । जब वे पहली बार अपनी पुत्री को इस व्यवसाय में उतारती हैं , तो एक बड़ा समारोह होता है , जिसे "नथ उतारने का " उत्सव कहते हैं । जो व्यक्ति सबसे बड़ी बोली बोलता है , वह उसकी "नथ" उतारता है , xxxxxxxx अर्थात् उसके साथ प्रथम बार संभोग करता है । "पाकिज़ा" फिल्म में हम इसे देख सकते हैं । कुमाऊं प्रदेश में "मिरासिनें " होती हैं । मूलतः तो वे गाने-बजाने का काम करती थीं , परंतु अब देह का व्यापार भी करने लगी हैं । उनमें भी यह व्यवसाय वंशानुगत है ।

/7/ <u>वासना-पीड़ित वेश्याएं :</u>

कुछ स्त्रियों में अन्य स्त्रियों की अपेक्षा यौन-भावना बहुत ही प्रबल होती है । उनको हम "विपुलवासनावती" कह सकते हैं । अंग्रेजी में उनके लिए शब्द है — "निम्फो" (Nympho) । ऐसी स्त्रियों

की काम-वासना किसी एक पुरुष से तृप्त नहीं होती है , अतः वे नये-नये शिकार की टोह में रहती हैं । अधिक यौन इच्छा होने के कारण उनकी योनि में यौन-ग्रन्थियों का स्राव होता रहता है जिनसे उनकी यौनेच्छा और भी प्रबल हो उठती है । ऐसी स्त्रियां पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों की अवहेलना करके भी अपनी वासना-पूर्ति के लिए नये-नये पुरुषों को खोजती रहती हैं । "जल टूटता हुआ" की डलवा , "रेखा" उपन्यास की रेखा भारद्वाज , " किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदाबेन सेठानी ~~आदि इस प्रकार~~ , " इमरतिया" की गौरी सधुआइन आदि इस प्रकार की औरतें हैं । मेरे निर्देशक डा. पारूकान्त देसाई ने एक आस्ट्रलियन विपुलवासनावती महिला पर एक "चमत्कारिका" लिखी है —

> " हे आस्ट्रिलियन द्रौपदी ! / भारतीय द्रौपदी तो कदाचित थी अभिशप्त पांच पतियों के लिए / पर तुमने तो रख लिये हैं तीन-तीन मर्द अपनी ही मर्जी से / इस घोषणा के साथ / कि उनके तुम्हारे प्रति के प्रेम में याकि सेवामें / किंचित भी कमी बरती गयी / तो करोगी तुम निकाल बाहर लतिया-लतिया कर / सप्ताह के लघु-दुकूल के तीन छोरों पर बांध दिया है तुमने उनको / हे विपुलवासनावती पुरुषमानमर्दिनी तुम्हें हो प्रणाम भारत की अरबों-खरबों , सहस्त्राधिक वर्षों से पदाक्रान्त / नरवासनादंशित नारियों के ! " 82

उन दिनों में उक्त महिला का किस्सा किसी दैनिक-पत्र में निकला था । उस पर डाक्टरसाहब की यह काव्यात्मक टिप्पणी थी ।

/8/ <u>परिस्थितिजन्य वेश्याएं :</u>

इस श्रेणी में वे वेश्याएं आती हैं जो किसी परिस्थिति या कुसंगति में पड़ने के कारण वेश्यावृत्ति करने पर मजबूर हो जाती हैं । गरीबी , वैधव्य , बेकारी , अनमेल विवाह , बाल-विवाह , बलात्कार, अनाथ होना , फुसलाकर भगा लाना या अपहरण करके जबरन समर्पण के लिए दबाव डालना जैसी परिस्थितियों में लाचार व मजबूर होकर कई

स्त्रियां वेश्यावृत्ति करने लगती हैं । "सेवासदन" की सुमन , "मुर्दाघर" की मैना , "आगामी अतीत " की चांदनी , "प्रिया" (दीप्ति खंडेलवाल) की सौदामिनी , "उस तक" (कुसुम अंसल) की मुक्ता , "उसका घर" (मेहरून्निसा परवेज) की एलमा , " बंटता हुआ आदमी" (निरूपमा सेवती) की सुनंदा , "नार्वे" (शशिप्रभा शास्त्री) की मालती , "ढहती दीवारें " (मीना दास) की माधुरी या सुप्रिया , "सलाम आखिरी" (मधु कांकरिया) की कई वेश्याएं इसके उदाहरण हैं ।

/9/ अपराधी एवं पिछड़ी जातियों व जनजातियों की वेश्याएं :

कई जातियां और जनजातियां ऐसी हैं जिनमें स्त्रियों और लड़कियों से वेश्यावृत्ति करायी जाती है । कई घुमक्कड़ जनजातियों की स्त्रियां यह कार्य करती हैं । इनमें नट ,बेरिया , बसावी , कंजर , सांसी आदि प्रमुख हैं । हिन्दी में "सूखता हुआ तालाब " , "कब तक पुकारूं ? " ,"कांचघर" , "जल टूटता हुआ" , " अलग अलग वैतरणी " , "आधा गांव " , " मुर्दाघर" , "सलाम आखिरी" प्रभृति उपन्यासों में हमें इस श्रेणी की कई वेश्याएं मिल जाएंगी ।

/10/ धार्मिक वेश्याएं :

यह शीर्षक कुछ लोगों को बड़ा विचित्र लग सकता है और उनमें प्रश्न भी पैदा हो सकता है कि धर्म जिसका उद्देश्य बड़ा उम्दा माना गया है , उस क्षेत्र में वेश्याएं कैसे हो सकती हैं ? किन्तु हमारे यहां ही नहीं , विश्व-भर में बहुत-से उम्दा कामों के आवरण में अनेक सामाजिक बुराइयां पनपती हैं । प्राचीन काल से ही भारत में देवदासी प्रथा प्रचलित रही है , जिनमें ज्यादातर पिछड़ी जातियों की युवा व सुन्दर लड़कियों को मंदिर में सौंप दिया जाता है । प्रकटतः ये लड़कियां मंदिर में गायन तथा नृत्य का कार्य करती हैं , किन्तु यह तथ्य सभी जानते हैं कि उनका कार्य मंदिर के पुजारी , ट्रस्टी तथा मंदिर में आनेवाले विशिष्ट मेहमानों की यौन-इच्छाओं को तृप्त करने का

होता है । इन्हें भगतीनियों " भगतीनियों " के नाम से भी कुछ लोग पुकारते हैं । इनके अलावा कई मठों व आश्रमों में सधुआइनें होती हैं। उनका काम भी मंदिर-मठ-संप्रदाय से जुड़े हुए हर शक्तिशाली व संपन्न व्यक्ति की यौन-इच्छा की पूर्ति है । उनको रखा ही इसलिए जाता है । पूर्ववर्ती पृष्ठों में इसकी चर्चा हो चुकी है । [83]

/11/ पुरुष-वेश्याएं ‖ Male-Prostitutes ‖ :

"वेश्या" कहते ही हमारे सामने एक स्त्री का चित्र आता है , किन्तु प्राचीन काल से ही हमारे यहां पुरुष भी धन लेकर यौन-कर्म करता रहा है । प्राचीन व मध्यकालीन युग में राजा-महाराजाओं, सामंतों और नवाबों के अन्तःपुर में कई-कई स्त्रियां होती थीं । एक व्यक्ति उन सबको कभी संतुष्ट नहीं कर सकता , अतः वे रानियां या उप-पत्नियां अपनी यौन-तुष्टि के लिए अन्तःपुर में पुरुषों को बुलाती थीं । इन पुरुषों को हम पुरुष-वेश्या कह सकते हैं । वात्स्यायन कामसूत्र में कहा गया है —" नागरकों को अन्तःपुर में ले जाने के लिए धाय की लड़कियां या रानियों की अंतरंग सखियां , सहचरियां लोभ देकर ले जाया करती हैं । ... वे उन नागरिकों को बहकाते समय रनिवास में आसानी से प्रवेश और निकलने के सुगम मार्ग , पहरेदारों की असावधानी , महल की विशालता एवं राजा और राजकुमारों का हर समय रनिवास में न रहने का विश्वास विश्वास दिलाती हैं ।" [84] इससे यह प्रथा प्राचीन समय से है , यह प्रतिपादित होता है । ऊपर जिन "विपुलवासनावती" स्त्रियों का उल्लेख किया है , वे भी पुरुष-वेश्याओं से यौन-तुष्टि लाभ करती हैं । पृ. 116 पर जिस आस्ट्रेलियन महिला की बात की है , वह यौन-संतुष्टि के लिए तीन-तीन पुरुष-वेश्याओं को रखती थी । आजकल बहुत-सी संपन्न घरों की महिलाएं पुरुष-वेश्याओं द्वारा अपनी यौन-क्षुधा को तृप्त करती हैं । शैलेश मटियानी के उपन्यास "कबूतरखाना" तथा उनकी कहानियों " जिसकी जरूरत न थी " , " विट्ठल ", "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " आदि में हमें पुरुष वेश्याओं के कई रूप मिलते हैं । " किस्सा नर्मदाबेन गंगु-

बाई" उपन्यास की सेठानी नर्मदाबेन अपनी यौन-तुष्टि के लिए पुरुष-वेश्या का प्रयोग करती है। खन्ना नामक एक पंजाबी आदमी था। वह "स्पेशल "स्पेशल वर्कर" बनकर खादी का झोला कन्धे पर डाले बड़े-बड़े घरों में जाता है और उन घरों में रहने वाली औरतों की नब्ज को भलीभांति पहचानता है। नर्मदाबेन उसे "हायर" करती है। एक बार नर्मदाबेन उसे दुबारा उसे "सीक्रेट-रूम" में ले जाने की बात करती है, तब वह साफ मना कर देता है — "मैं मजदूर नहीं हूं। इस बिल्डिंग को बनाए रखना मेरी "बिजनेस" का पहला उसूल है।" 85

/12/बार-गर्ल्स वेश्याएं :

मुंबई जैसे महानगरों में "बार" होते हैं। वहां जो लोग शराब पीने के लिए आते हैं उनके मनोरंजन के लिए "बार-गर्ल्स" रखीं जाती हैं। प्रकटतः उनका काम ग्राहकों को शराब "सर्व" करना और डान्स के द्वारा उनका मनोरंजन करना है, लेकिन ये बार-डान्सर्स बड़ी अश्लील हरकतें करती हैं, शरीर का प्रदर्शन करती हैं और कोई ग्राहक रीझ जाएं तो उसके साथ यौन-कर्म भी करती हैं। इस प्रकार ये बार एक प्रकार से वेश्याघर ही हो गए थे। पिछले साल §2004§ महाराष्ट्र सरकार ने इन "बारों" पर प्रतिबंध लगा दिया तो कई बार-गर्ल्स धंधा करने के लिए वलसाड, सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि शहरों में आती थीं।

/13/ मसाज वेश्याएं :

प्रकटतः इनका काम पुरुषों के शरीर की मसाज करने का होता है, परंतु मसाज करते-करते ये पुरुषों को इतना उत्तेजित कर देती हैं कि अन्ततः उनका वह "मसाज-कर्म" यौन-कर्म में तब्दिल हो जाता है। सिंगापुर में मसाज का एक प्रकार है — सैण्डविच मसाज। उसमें दो गिशाएं होती हैं — एक पुरुष के नीचे और एक पुरुष के ऊपर। उसमें "सीमरिंग" के द्वारा पुरुष को उत्तेजित किया जाता है। जिन

पुरुषों के लिंग-शैथिल्य की शिकायत होती है , वे इनका प्रयोग करते हैं । 86

/14/ प्रच्छन्न वेश्याएं :

उन स्त्रियों को प्रच्छन्न वेश्याओं की श्रेणी में रख सकते हैं जो प्रकटतः गृहिणी तथा नौकरीशुदा होती हैं , परन्तु " Lavishly " जीने के लिए या नौकरी में प्रमोशन हेतु किसी भी सीमा तक जाने के लिए तैयार होती हैं । " पतझड़ की आवाजें " की उषा , "चिड़ियाघर" की मिसेज रिजवी , "नावें" की मालती आदि को हम इस श्रेणी में रख सकते हैं ।

/15/ गौनहारिन वेश्याएं :

जो वेश्याएं केवल नाच-गान के द्वारा अपने ग्राहकों का मनोरंजन करती हैं और जिस्मफरोशी का काम नहीं करतीं उनको "गौनहारिन" वेश्या कहा जाता है । यदि कहीं उनका शारीरिक संबंध भी होता है तो वह किसी एक व्यक्ति के साथ होता है । इस दृष्टि से उसे वात्स्यायन द्वारा वर्णित "एकचारिणी वेश्या" की श्रेणी में रख सकते हैं । 87 "सेवा-सदन" उपन्यास की भोली गौनहारिन वेश्या है । गौनहारिन वेश्याओं को धार्मिक प्रसंगों नृत्य-गान इत्यादि के लिए भी आमंत्रित किया जाता है ।

﴾ग﴿ आर्थिक आधार पर वेश्याओं के प्रकार :

आर्थिक आधार पर वेश्याओं को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ उच्चवर्गीय वेश्या , /2/ मध्यवर्गीय वेश्या और /3/ निम्नवर्गीय वेश्या । उच्चवर्गीय वेश्या उसे कहते हैं जो उच्चवर्ग से सम्बन्ध रखती हैं । प्राचीन तथा मध्यकाल में राजा-महाराजा , सामंतों तथा नवाबों की जो वेश्याएं थीं उनको हम इस वर्ग में रख ~~सकते~~× सकते हैं ।

प्राचीन साहित्य में निरूपित अप्सराओं तथा यक्षिणियों को भी इस वर्ग में रख सकते हैं। वात्स्यायन निरूपित "गणिका" तथा उपर्युक्त विवेचन में "काल-गर्ल्स" तथा "होटेल-वेश्याओं" के संदर्भ में जिन वेश्याओं को बताया गया है, उन तमाम को हम प्रथमवर्ग या उच्च-वर्ग में रख सकते हैं। संक्षेप में ये हाय-फाय लोगों के लिए हैं और इस वर्ग की वेश्याएं भी "हाय-फाय" वर्ग की होती हैं — शिक्षित, "इंग्लिश-स्पीकिंग", फैशनेबल, ऊंची सोसायटी के तौर-तरीकों को जानने-समझने वाली और एक-एक रात के सत्तर-अस्सी हजार या लाख रूपये बहू "चार्ज" करने वाली, पंचतारक होटलों में जाने वाली, इम्पोर्टेड शराब पीने और पिलानेवाली। कई बार ये वेश्याएं बड़े आदमियों के साथ दूसरे बड़े महानगरों में भी जाती हैं। ये बाय "ऐयर" ट्रावेल करती हैं।

मध्यवर्गीय वेश्याएं मध्यवर्ग या अधिक से अधिक उच्च-मध्यवर्ग के लोगों के लिए होती हैं। ये तीन तारक या उससे निम्न प्रकार के किन्तु अन्यथा सामान्य या मध्यवर्ग के लिए महंगे कहे जाए ऐसे होटलों में जाती हैं। इंग्लिश शराब पीती और पिलाती हैं। इनमें प्रच्छन्न प्रकार की और अप्रकट समूह की वेश्याएं भी हो सकती हैं।

निम्नवर्गीय वेश्याएं निम्नवर्ग के लिए होती हैं। ज्यादातर वे निम्नवर्ग से ही आती हैं। इनमें भी हम दो श्रेणियां बना सकते हैं — /क/ निम्न और /ख/ अति-निम्न। निम्न वर्ग की वेश्याएं वेश्याघरों या चकलों में मालिकों या मालकिनों के अन्तर्गत "अधिया-सिस्टम" में काम करती हैं। "अधिया सिस्टम" याने आधा-आधा, फिफ्टी-फिफ्टी। वेश्याओं को रहने की सुविधा देना एवं ग्राहक जुटाने के बदले मालकिन या मासी को कमाई का आधा हिस्सा देना पड़ता है। [88] इसमें वे फ्लाइंग वेश्याएं भी आती हैं जो नगरों या महानगरों में आस-पास के कस्बों या गांवों से आती हैं और थोड़े समय के लिए कमरा किराये पर लेकर अपना धंधा करती हैं। "सलाम आखिरी" की अधिकांश वेश्याएं इस श्रेणी में आती हैं। अति-निम्न श्रेणी की वेश्या उसे कहते

हैं जो झोंपड़पट्टियों में या नेशनल हाई वे के आसपास झोंपड़पट्टियों में रहती हैं और मामूली रकम लेकर देह का सौदा करती हैं । ४शब्द४ "मुर्दा-घर" उपन्यास में हमें इस प्रकार की वेश्याएं मिलती हैं ।

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं —

§1§ जो लड़की या महिला आर्थिक लाभ से प्रेरित होकर किसी अन्य पुरुष से यौन-सम्बन्ध स्थापित करती है उसे "वेश्या" कहा जाता है । वैश्य चीज-वस्तुओं का व्यापार करते हैं और वेश्या अपने देह का व्यापार करती है ।

§2§ हिन्दी , गुजराती ~~अंग्रेजी~~ , अंग्रेजी , उर्दू आदि भाषाओं के शब्दकोशों में इसके जो अर्थ दिए हैं उससे एक बात सामान्यतः फलित होती है कि देह का व्यापार करने वाली महिला को वेश्या कहा जाता है ।

§3§ उपर्युक्त भाषाओं के शब्दकोशों में वेश्या के समानार्थी या पर्यायवाची शब्दों में वेशयुवती , वेशवधू , वेशवनिता , वेशस्त्री , वेश्यांगना, वारांगना , वारवधू , वारमुखी , वारयुवती , वारसुंदरी , रंडी , गणिका , रामजनी , कसबण , तारकन्या , वारस्त्री , छिनाल , पतुरिया, बाजारू स्त्री , रखैल , तवाइफ़ , तवायफ़ , क्रीडानारी , चर्चटी , विभा-वरी , नगरनायिका , मंगलामुखी , रक्कासा , नर्तकी , नगरवधू आदि लगभग तीस शब्द उपलब्ध होते हैं ।

§4§ "Compact Oxford Reference Dictionary" में "Prostitute" शब्द की व्याख्या करते हुए "Woman" के स्थान पर "Person" शब्द का प्रयोग हुआ है , जिससे संकेतित होता है कि "वेश्या-कर्म" पुरुष भी कर सकता है । इसीसे "Male-Prostitute" जैसा एक शब्द भी हमें मिलता है ।

§5§ वेश्या के व्यवसाय के लिए वेश्यावृत्ति, वेश्याकर्म, रंडी-बाजी, वारसेवा, लैंगिक व्यभिचार, बदकारी, उर्वशीकर्म[89], "Prostitution" आदि शब्द मिलते हैं।

§6§ वेश्या के निवास-स्थान के लिए वेश्यालय, वेशवास, वेश्यावाडो § गुजराती §, वेश्याश्रय, वेश्यागृह, रामालय, चकला, गणिकालय आदि शब्द मिलते हैं; वेश्या के दलाल या भड़ुवे के लिए वेश्याचार्य, गणिकाचार्य, गणिका व्यापारी, रंडीबाज, वेश्यापणिक, वारांगना व्यापारी, वनिता-विलासी, पतुरियाबाज, जिस्मफरोश, बुर्दाफरोश आदि शब्द; स्त्री के लिए गालीवाची शब्दों में वेश्या, रंडी, छिनाल, पतुरिया, कसबिन आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। वेश्याचार्य के लिए गांडू और लौंडा जैसे शब्द भी मिलते हैं। वेश्यापुत्र के लिए केवल उर्दू कोश में शब्द मिलता है — तवाइफ़ज़ाद।

§7§ वेश्यावृत्ति विश्व का सबसे पुराना व्यवसाय है। यह तभी से चला आ रहा है जब से विवाह-संस्था का जन्म हुआ और जबसे यौन-कर्म को नैतिक मानदण्डों से जोड़ा गया।

§8§ एनसायक्लोपीडिआ आफ सोशल साइन्सिस, एलियट और मैरिल, हैवलोक एलिस, बोंगर आदि पाश्चात्य विद्वान तथा विचारक; वात्स्यायन, मनु आदि प्राच्य चिंतक; डा. एस.डी. पुनेकर, डा. आर.के मुकर्जी, डा. एम.एल. गुप्ता आदि भारतीय विद्वान और समाजशास्त्रियों ने "वेश्यावृत्ति" को विभिन्न आयामों के तहत परिभाषित किया है। उन सबकी परिभाषाओं के आधार पर हम वेश्यावृत्ति के निम्नलिखित अभिलक्षण विश्लेषित कर सकते हैं — वेश्यावृत्ति दैहिक व्यवसाय, आर्थिक लाभ हेतु किया गया यौन-कर्म, भावना का अभाव, अवैध सम्बन्ध, रूप और यौवन का सौदा, ग्राहकों के पक्ष में भेदभावरहित व्यवहार, नैतिकता की सामान्य अवधारणा के विपरीत व्यवहार आदि-आदि।

§9§ वेश्यावृत्ति के प्रमुख कारणों में आर्थिक कारण , नारी की आर्थिक पराश्रितता , किसी स्त्री का विपुलवासनावती § Nympho § होना , विवाह-विच्छेद , पारिवारिक स्थितियां , दहेजप्रथा , विधवा-विवाह पर रोक , दुखी वैवाहिक जीवन , प्रेम-वंचना , माता-पिता के कुसंस्कार , पति की नपुंसकता , अनैतिक व्यापार का बोलबाला , बुरा पड़ोस , अनमेल विवाह , दिमागी कमजोरी , सामाजिक कुरीतियां, आसान ऋण , युद्ध , वीड़ियो सीड़ी का दुरुपयोग आदि की गणना कर सकते हैं ।

§10§ वेश्यावृत्ति के अन्य कारकों में औद्योगीकरण , नगरीकरण, मनोवैज्ञानिक कारक , धार्मिक कारक आदि को विश्लेषित किया जा सकता है ।

§11§ वेश्यावृत्ति के दुष्प्रभावों में नारी जाति का अपमान , व्यक्तित्व का विघटन , पारिवारिक विघटन , सामाजिक विघटन , नैतिक अधःपतन , अपराध-वृद्धि , आर्थिक पायमाली , यौन-रोग के शिकार ~~होना~~xx होना आदि की गणना कर सकते हैं ।

§12§ भारत में वेश्यावृत्ति प्राचीन काल से प्रचलित है । भारतीय पुराणों , धर्मग्रन्थों तथा साहित्य-ग्रन्थों में कई स्थानों पर उसके उल्लेख मिलते हैं । मनु , गौतम , बृहस्पति आदि स्मृतिकार तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अनेक स्थानों पर उसका उल्लेख मिलता है । वात्स्यायन कामसूत्र में समूचा एक प्रकरण इस विषय पर दिया गया है । भारत में वैदिक काल , मौर्य और गुप्त काल , मध्यकाल § विशेषतः मुगलकाल § , ब्रिटिश काल आदि सभी कालों में हमें वेश्यावृत्ति का प्रचलन मिलता है , केवल उसके बाह्य स्वरूप में ~~किंचित~~x किंचित परिवर्तन मिलता है ।

§13§ वात्स्यायन के कामसूत्र में तीन प्रकार की वेश्याओं का उल्लेख मिलता है — गणिका , रूपजीविनी और सामान्या । गणिका 64 कलाओं में दक्ष होती थी और उसका राज-दरबारों में भी सम्मान होता था । रूपजीविनियां अत्यन्त ~~सुंदर~~x सुन्दर होती थीं और अपने रूप तथा सुगठित देहयष्टि के कारण लोगों में यौनेच्छा

को जगाती है और उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करती हैं । सामान्या सबको उपलब्ध होती हैं । उनमें कला-नृत्य-संगीत इत्यादि का अभाव होता है । जिस्मफरोशी ही उनका काम है ।

§14§ ब्रिटिश काल में औद्योगीकरण , नगरीकरण , ~~स्लमि×क~~ स्लमीकरण आदि के कारण वेश्यावृत्ति के स्वरूप में भी काफी परिवर्तन आया है । इसके कारण वेश्यावृत्ति के दो रूप मिलते हैं — एकदम सस्ती वेश्याएं और हाय-फाय वेश्याएं ।

§15§ मुंबई की वेश्याओं पर किए गए अध्ययन से वेश्या-जीवन के कई पक्षों का उद्घाटन हुआ है और उसका जघन्य रूप सामने आया है । इस प्रकार का एक अध्ययन " आल इण्डिया मोरल एण्ड सोशल हाइजीन एसोसियेशन " ने भी किया है ।

§16§ अध्याय के समग्र विवेचन के आधार पर वेश्याओं को प्रमुखतः तीन आधारों पर वर्गीकृत कर सकते हैं — वात्स्यायन कामसूत्र का आधार , समाजशास्त्रीय आधार और आर्थिक आधार ।

§17§ वात्स्यायन कामसूत्र में तीन प्रकार की वेश्याओं का वर्णन मिलता है — गणिका , रूपाजीवा और सामान्या । इसके अलावा एक-चारिणी वेश्या पर भी वात्स्यायन ने विस्तार से विचार किया है । वेश्या होते हुए भी उसकी निष्ठा किसी एक पर होती है । अन्यत्र वात्स्यायन ने वेश्याओं के दश भेद निर्धारित किए हैं — कुम्भदासी , परिचारिका , कुलटा , स्वैरिणी , नटी , शिल्पकारिका , प्रकाश-विनष्टा , रूपाजीवा और गणिका ।

§18§ समाजशास्त्रीय आधार पर वेश्याओं के अमूमन पन्द्रह प्रकार निर्धारित होते हैं — प्रकट समूह , अप्रकट समूह , काल-गर्ल्स , होटेल वेश्याएं , रखैल वेश्याएं , वंशानुगत वेश्याएं , वासना-पीड़ित वेश्याएं , परिस्थितिजन्य वेश्याएं , अपराधी एवं पिछड़ी जातियों तथा जनजातियों की वेश्याएं , धार्मिक वेश्याएं , पुरुष -वेश्याएं , बार-गर्ल्स वेश्याएं , मसाज वेश्याएं , प्रच्छन्न वेश्याएं और गौन-

हारिन वेश्याएं आदि-आदि ।

§19§ आर्थिक आधार पर वेश्याओं को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं -- उच्चवर्गीय वेश्याएं, मध्यवर्गीय वेश्याएं और निम्नवर्गीय वेश्याएं । उच्चवर्गीय वेश्याओं में प्राचीन साहित्य में वर्णित अप्सराएं और यक्षिणियां तथा वात्स्यायन निरूपित गणिकाएं, काल-गर्ल्स, होटेल वेश्याएं आदि का समावेश होता है । मध्यवर्गीय वेश्याएं मध्यवर्ग से सम्बद्ध होती हैं और निम्नवर्गीय वेश्याएं एकदम सस्ती और निम्नवर्गीय लोगों के लिए होती हैं ।

§20§ अब वेश्याओं को "सेक्स-वर्कर" भी कहा जाने लगा है । वेश्याओं के विस्तार को "लालबत्ती विस्तार" § Red light Area § कहा जाता है । आधुनिक काल में वेश्याओं को देखने के दृष्टिकोण में एक निश्चित और गुणात्मक परिवर्तन आया है ।

====== XXXXXX =======

: सन्दर्भानुक्रम :

§1§ मशक्षे नालंदा विशाल शब्द-सागर : सं. नवलजी : पृ. 1303 ।
§2§ वही : पृ. 1303 ।
§3§ वही : पृ. 1303 ।
§4§ वही : पृ. 1252 ।
§5§ वही : पृ. 1252 ।
§6§ वही: पृ. 305 ।
§7§ बृहद् गुजराती कोश : खण्ड-2 : सं. के.का. शास्त्री : पृ. 2112 ।
§8§ वही : पृ. 2112 ।
§9§ वही : पृ. 2055-56 ।
§10§ सी : द कनसाइज आक्सफर्ड डिक्शनरी : पी. 905 ।
§11§ सी : काम्पेक्ट आक्सफर्ड रेफरन्स डिक्शनरी : पी. 670 ।
§12§ सी : चैम्बर्स इंग्लिश हिन्दी डिक्शनरी : पी. 1045 ।
§13§ द्रष्टव्य : बृहद् अंग्रेजी-हिन्दी कोश : सं. डा. हरदेव बाहरी : पृ. 1459 ।
§14§ द्रष्टव्य : संस्कृत-हिन्दी कोश : सं. वामन शिवराम आप्टे : पृ. 977 ।
§15§ द्रष्टव्य : उर्दू-हिन्दी कोश : सं. मुहम्मद मुस्तुफा खाँ "मद्दाह" : पृ. 285 ।
§16§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 565 ।
§17§ सी : एनसायक्लोपीडिया आफ सोशल साइन्सिस : 1935 : चेप्टर - प्रोस्टिट्यूशन : पी. 552 ।
§18§ इबिड : पी. 553 ।
§19§ सोशल डिसऑर्गेनाइजेशन : एलियट एण्ड मैरिल : 1950 : पी. 155
§20§ सोसियोलोजी आफ डेविएण्ट बिहेवियर : क्लीनार्ड : पी. 259 ।
§21§ सेक्स इन रीलेशन टु सोसायटी : हैवलोक एलिस : पी. 155 ।

§22§ क्रिमिनालिटी एण्ड इकोनोमिक कण्डीशंस : बोंगर : पी. 152 ।

§23§ रिपोर्ट आफ द एडवाइजरी कमिटि आन सोशल एण्ड मोरल हाइ-
जीन : 1954 : पी. 30 ।

§24§ कमिटि रिपोर्ट पार्ट-3 : मैथोड आफ रीहेबिलियेशन आफ एडल्ट
प्रxxx प्रोस्टिट्यूट्स : पी. 7 ।

§25§ द थर्टीस्थ रीपोर्ट आफ द कमिटि आन सोशियल एण्ड मोरल हाइजीन :
1958 : पी. 101 ।

§26§ ए स्टडी आफ प्रोस्टिट्यूट्स इन बोम्बे : 1962 : डा. एस.डी.
पुनेकर : पी. 235 ।

§27§ द्रष्टव्य : नदी फिर बह चली : पृ. 260 ।

§28§ द्रष्टव्य : यही प्रबंध : पृ. 50-51 ।

§29§ द्रष्टव्य : " हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक ग्रन्थियाँ
एवं समस्याओं का चित्रण : डा. मनीषा ठक्कर : पृ. 88 ।

§30§ एन एबीजेड आफ लव : डा. इंगे एण्ड स्टेन हेगेलर : पी. 116 ।

§31§ द्रष्टव्य : चिंतनिका : डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 61 ।

§32§ नदी नहीं मुड़ती : डा. भगवतीशरण मिश्र : पृ. 37 ।

§33§ रतिनाथ की चाची : नागार्जुन : पृ. 23 ।

§34§ द्रष्टव्य : हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी
उपन्यास : डा. पारूकान्त देसाई : 220 ।

§35§ उग्रतारा : नागार्जुन : पृ. 123 ।

§36§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 265 ।

§37§ डा. बी. जोर्डर : क्लास कोनसियस प्रोस्टिट्यूट्स : द हिन्दुस्तान
टाइम्स : 28-6- 1978 ।

§38§ द्रष्टव्य : हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में
साठोत्तरी उपन्यास : पृ. 272 ।

§39§ सी : सोशल हाइजीन लेजिस्लेशन मैन्युअल : 1920 : पृ. 48 ।

§40§ किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई : शैलेश मटियानी : पृ. 30 ।

§41§ द्रष्टव्य : हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में
साठोत्तरी उपन्यास : पृ. 152-153 ।

§42§ सूखे सेमल के वृन्तों पर : डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 28 ।

§43§ द्रष्टव्य : " ऋषभचरण जैन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व " : शोध-प्रबंध : डा. गीता आनंदानी : पृ. 181 ।

§44§ जनानी सवारियां : ऋषभचरण जैन : पृ. 73 ।

§45§ द्रष्टव्य× द्रष्टव्य : " आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : " डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 109 ।

§46§ द्रष्टव्य : भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 264 ।

§47§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 267 ।

§48§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 268 ।

§49§ क्रिमिनालिटी एण्ड इकोनोमिक कण्डीशंस : डबल्यू. ए. बोंगर : 1911 : पीपी. 321-326 ।

§50§ " द्रष्टव्य : प्रेमचंद : व्यक्ति और साहित्यकार " : डा. मन्मथनाथ× मन्मथनाथ गुप्त : पृ. 229-230 ।

§51§ इण्डियन वर्किंग क्लास× क्लास : डा. आर.के. मुकर्जी : पृ. 230 ।

§52§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 110-111 ।

§53§ वही : पृ. 112 ।

§54§ प्रोस्टिट्यूशन एण्ड फीबल माइण्डेडनेस : जर्नल आफ द अमेरिकन सोशल हाइजीन एसोसिएशन : 1919 : पी. 3 ।

§55§ द सायको-पैथोलोजी आफ द प्रोस्टिट्यूशन § पैम्फलेट § : एडवर्ड ग्लोवर : इन्स्टीट्युट आफ द साइन्टिफिक ट्रीटमेण्ट आफ डेलिक्वेन्सी : लंडन : 1945 ।

§56§ द्रष्टव्य : हिन्दी उपन्यास साहित्य की परंपरामें साठोत्तरी उपन्यास : डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 96-97 ।

§57§ वही : पृ. 125 ।

§58§ द्रष्टव्य : इमरतिया : नागार्जुन : पृ. 27 ।

§59§ वही : पृ. 29 ।

§60§ वही : पृ. 115 ।

§61§ सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : भूमिका : पृ. 9 ।

§62§ वही : पृ. 30 ।

§63§ द्रष्टव्य : हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास : पृ. 160 ।

§64§ सलाम आखिरी : पृ. 97 ।

§65§ द्रष्टव्य : तीन इक्के : अभयचरण जैन : पृ. 96 ।

§66§ द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : पृ. 72 ।

§67§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 269 ।

§68§ द्रष्टव्य : आखिरी सलाम : पृ. 87 ।

§69§ द्रष्टव्य : भारतीय मिथक कोश : डा. उषापुरी विद्यावाचस्पति : पृ. 243 , 38 और 255 क्रमशः मेनका , उर्वशी और रंभा के लिए ।

§70§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 270 ।

§71§ ए स्टडी आफ प्रोस्टिट्यूशन इन बोम्बे : बाय टाटा स्कूल आफ सोशल साइन्सिस : 1962 : पीपी. 91-166 ।

§72§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 272 ।

§73§ सी : द हिन्दुस्तान टाइम्स : 30-11-1975 ।

§74§ द्रष्टव्य : भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 272 ।

§75§ पतझड़ की आवाजें : निरूपमा सेवती : पृ. 95 ।

§76§ द्रष्टव्य : यही प्रबंध : पृ. 47 ।

§77§ सभी 1 से 10 : वात्स्यायन कामसूत्र : यशोधर कृत जयमंगला टीका सहित : 616-624 ।

§78§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 701 ।

§79§ द्रष्टव्य : कहानी - " विट्ठल" : कहानी संग्रह - मेरी तैंतीस कहानियाँ : शैलेश मटियानी : पृ. 75 ।

§80§ द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. 13 ।

§81§ लेख - " देह व्यापार का बदलता रूप " : कुसुम मित्तल : वर्तमान साहित्य : नवम्बर-2004 : पृ. 49 ।

§82§ सूखे सेमल के वृन्तों पर : पृ. 65 ।

{83} 1 से लेकर 10 तक की श्रेणियों के लिए देखिए : भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 260-261 ।

{84} वात्स्यायन कामसूत्र : उपरिवत् : पृ. 588 ।

{85} किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई : शैलेश मटियानी : पृ. 92 ।

{86} द सेक्स लाइफ फाइल : डा. एस.जे. तुफिल : पृ. 47 ।

{87} वात्स्यायन कामसूत्र : उपरिवत् : पृ. 616 ।

{88} द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : पृ. 21 ।

{89} द्रष्टव्य : मेरी तैंतीस कहानियाँ : शैलेश मटियानी : पृ. 75 ।

====== XXXXXX ========